हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 16 मार्च 2025

11 होली नकारात्मकता को जलाने व पवित्रता को ...

12 सरसों खरीद की तैयारियां मुक्कमल पहुंचने लगी...

डॉ. साहिल महत्ता
Consultant Orthopaedics & Joint Replacement Surgeon
हड्डी एवं जोड़ प्रत्यारोपण विशेषज्ञ
MBBS,MS(Orthopaedics)
10+ वर्षों का अनुभव

आयुष्मान योजना के तहत
घुटने व कुल्हे का प्रत्यारोपण अब बिल्कुल फ्री
क्या आपको दर्द से राहत चाहिए?
क्या आपको भी चलने-फिरने में तकलीफ हो रही है? | गठिया (Arthritis) से घुटनों की जकड़न बढ़ गई है? | क्या आपके भी घुटनों में गैप है? | दर्द के कारण रातों में नींद नहीं आना? | कुल्हे का गल जाना? दवाओं और फिजियोथेरेपी से आराम नहीं मिल रहा?
यदि आप भी इन समस्याओं से परेशान हैं, तो आज ही हमारे विशेषज्ञ से परामर्श करें

एम्बुलेंस/आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क करें:
70 09 09 0924
MK Hospital
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध

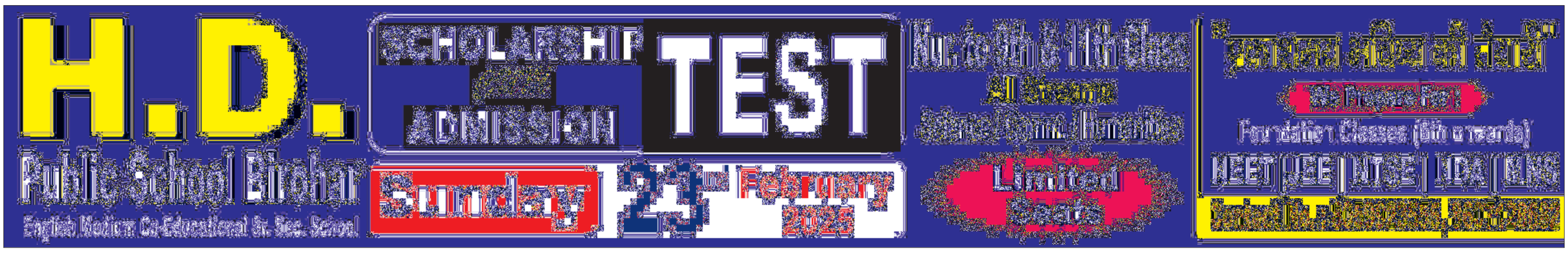

खबर संक्षेप

शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर आज

भिवानी। शहीदे आजम भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के बलिदान दिवस व शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में 16 मार्च को सुबह 10:15 बजे सैनी कल्याण परिषद द्वारा सरकुलर रोड स्थित बेगा अस्पताल में रक्त शिविर का आयोजन किया जाएगा। परिषद के उपप्रधान औमप्रकाश सैनी ने बताया कि शिविर में मुख्यतिथि सीएमओ डॉ. रघुवीर शांडिल्य व विशिष्ट अतिथि डॉ. मोनिका सांगवान उपस्थित होंगे।

शिव मंदिर के दानपात्र में चोरी, मामला दर्ज

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा के शहीद गुलाबसिंह पार्क के सामने स्थित शिव मंदिर के दानपात्र में चोरी हो गई। चोरी फाग के दिन दोपहर लगभग दो बजे हुई। हरिकेश कौशिक ने बताया कि पिछले 2 सालों से दानपात्र को खोला नहीं गया था। किसी अज्ञात के द्वारा चोरी की घटना को अंजाम दिया है। जिसकी शिकायत पुलिस में दी गई।

एक शाम अमर शहीदों के नाम कार्यक्रम 23 को

भिवानी। शहीद स्मृति सभा के स्वर्ण जयंती महोत्सव पर युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट द्वारा जोहड़ीवाला प्राचीन हनुमान मंदिर में 23 मार्च को 50वां विशाल राष्ट्रीय कवि सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम संस्थापक भागीरथ शर्मा मराठा व महामंत्री डॉ. पुरुषोत्तम पुष्प ने बताया कि अमर शहीद भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु के पावन बलिदान दिवस पर जोहड़ी वाला मंदिर के स्वामी विवेकानन्द सभागार में सांय तीन बजे कवि सम्मेलन का आयोजन होगा।

प्लाट में खड़े ट्रैक्टर ट्राली को जलाया

भिवानी। गांव खरक में प्लाट में खड़े ट्रैक्टर व ट्राली को अज्ञात व्यक्ति ने आग के हवाले कर दिया। पुलिस को दी शिकायत में मुकेश निवासी खरक खुर्द का रहने वाला हु औ उसके पास एक ट्रैक्टर- ट्राली 13 मार्च को शाम के समय मै काम करके लौटा और अपना ट्रैक्टर ट्राली को अपने प्लाट मे खड़ा कर दिया था सुबह करीब छह बजे पर मैने अपना ट्रैक्टर जो प्लाट मे खड़ा था। अज्ञात व्यक्ति आग लगा गया जो मेरा ट्रैक्टर पुरी तरह जल गया है । पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया।

चोरी के आरोप में दो युवकों को दबोचा

भिवानी। थाना सदर पुलिस भिवानी ने गांव कलिंगा में घर में घुसकर चोरी की वारदात को अंजाम देने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। इंद्राज निवासी कलिंगा ने थाना सदर पुलिस भिवानी को घर से गहने और नकदी चोरी होने की शिकायत दर्ज करवाई थी। अभियोग में दो आरोपियों को कलिंगा से गिरफ्तार किया गया है। आरोपित मनजीत व अमित निवासी राजू पाना कलिंगा जिला भिवानी है।

बदले मौसम के मिजाज ने बढ़ाई किसानों की हार्टबीट, रोकी सिंचाई

शनिवार दोपहर तक जिले में एक दो जगहों पर हल्की बूंदाबांदी हुई

भिवानी। आसमान में छाए बादलों का दृश्य और कृषि विज्ञान केंद्र में हवा की गति मापने का यंत्र। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

शनिवार को भी पल पल मौसम का मिजाज बदलता रहा। कभी काली घटाएं छाई तो कभी मौसम एकदम साफ व सूथरा रहा। धीमी गति से हवा चलती रही। आसमान में बादलवाई की वजह से किसानों की हार्टबीट बढ़ती व घटती रही। हालांकि दोपहर तक जिले में एक दो जगहों पर हलकी बूंदाबांदी हुई,लेकिन तेज हवा के झौंकों ने किसानों की हार्टबीट को बढाए रखा। शाम तक इसी तरह मौसम बना रहा।

सुबह जब लोग सोकर उठे तो उस वक्त आसमान काले बादलों से अटा हुआ था। धीमी गति से हवा चल रही थी। अल सुबह हलकी बूंदाबांदी भी हुई। बूंदाबांदी के साथ हवा चलने की वजह से किसानों के माथे की त्योरियां चढ गई। चूंकि इस वक्त सरसों की फसल की कटाई का कार्य जोरों पर है,जबकि गेहूं की फसल पकने की स्थिति में है। अगर इस वक्त हलकी सी बारिश के साथ हवा चलने लगी तो गेहूं की फसल जमीन पर बिछ सकती है। सुबह धीमी गति से हवा चल रही थी। जिसने किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दी। यहां यह बताते चले कि अगर गेहूं की फसल जमीन पर लेट जाती है तो उस फसल की औसतन पैदावार घटना लाजिमी है। क्योंकि फसल के जमीन पर लेटने के बाद उस फसल के दाने की पूरी बढ़वार नहीं हो पाती। फिलहाल मौसम में आ रहे एकदम बदलाव की वजह से किसानों हार्टबीट बढ गई है।

हलकी बूंदाबांदी के साथ ओलावृष्टि की आशंका

कृषि विज्ञान केंद्र के मौसम वैज्ञानिक डॉ. देवीलाल ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से मौसम परिवर्तनशील बना हुआ है। बीते दिवस भी कई जगहों पर हलकी बूंदाबांदी हुई। अगले 24 घंटों के भीतर भिवानी व चरखी दादरी जिले के अनेक इलाकों में हलकी बारिश तेज हवा के साथ होगी। इसके अलावा कुछ क्षेत्रों में बिजली की चमक के साथ ओलावृष्टि भी होने की आंशका बनी है। हालांकि ओलावृष्टि ज्यादा जगहों पर नहीं होगी,लेकिन उसके बावजूद किसान अपनी कटी व कढी हुई फसलों के ढेर को ढक कर रखे। साथ ही जिन किसानों ने सब्जी की फसलों की पौध तैयार की हुई है। वे किसान उन पौधों को ढक दे। ताकि अगल हलकी सी भी ओलावृष्टि हुई तो सब्जी की फसलों की पौधों में ज्यादा नुकसान होगा। उन्होंने बताया कि कल के बाद मौसम के साफ रहने की संभावना है। हलकी बारिश के बाद तापमान में हलकी सी गिरावट भी दर्ज की जा रही है।

किसानों ने रोकी फसलों की सिंचाई

इस वक्त फसलों को सिंचाई की बेहद सख्त जरूरत है। अगर इस वक्त सिंचाई नहीं हो पाती तो फसल की औसतन पैदावार घटना लाजिमी है। परंतु पिछले कुछ दिनों से मौसम में बदलाव हो रहा है,कभी तेज हवा के साथ हलकी बूंदाबांदी तो कभी हवा चल रही है। हवा चली तो गेहूं की फसल का जमीन पर बिछना तय है। जिसके भय से किसानों ने गेहूं की फसल की सिंचाई रोक दी है। किसानों का मानना है कि अगर इस वक्त गेहूं की सिंचाई की और हवा चल पड़ी तो फसल जमीन पर बिछ जाएगी। फसल बिछी तो औसतन पैदावार में कमी आना लाजिमी है।

युवती ने ससुराल में फंदा लगाकर दी जान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम

- तीन चार पहले हुई थी थिलोड निवासी पिंकी की शादी
- दो माह पहले पति पत्नी में गहनों को लेकर हुआ था झगड़ा

क्षेत्र के गांव थिलोड निवासी एक लड़की ने अपनी ससुराल में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। लड़की के परिजनों ने ससुराल पक्ष के लोगों पर परेशान करने व मारपीट करने का आरोप लगाया। लड़की के पिता ने इसकी शिकायत पुलिस को दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

थिलोड निवासी होशियार सिंह ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसकी लड़की पिंकी की शादी 2017 मे सोनु झुन्डाबास के साथ हिन्दू रितु रिवाज से हुई थी। शादी के 3-4 साल बाद सोनु व पिंकी की आपस मे अनबन रहने लगी थी। होशियार सिंह ने बताया कि 2021 मे इनकी आपस मे अनबन होने के कारण उसकी लड़की पिंकी घर थिलोड आ गई। मृतका पिंकी को सोनु व उसकी माँ जगवन्ती काफी तंग व परेशान करते थे। जिसके कारण वह तंग आकर मायके आ गई थी। अक्टूबर 2024 में सजय, सोनु , सुमेर उनके घर पर थिलोड आए थे। जिन्होने सोनु व पिंकी को आपस मे समझाया और संजय के कहने पर उसने अपनी लड़की पिंकी को उसके साथ उसके घर भेज दिया। करीब 2 माह पहले सोनु व पिंकी आपस मे जेवरात पर झगड़ा हो गया था। जिसके बाद लडके ने उनके घर जाकर इनकी सुलह करवा दी थी।

होशियार सिंह ने बताया कि 15 मार्च को दिनांक सुबह सरपंच बाबरवास ने उसके पास टेलिफोन करके सुचना दी की आपकी लडकी पिंकी ने फांसी लगाकर अपनी जिवन लीला समाप्त कर ली है। जिसके बाद इस सुचना पर वे मौका पर पहुचे। होशियार सिंह ने बताया कि जब वे वहाँ पहुंचे तो उन्होंने देखा की पिंकी कमरे में कपडे के फन्दे से लटकी हुई थी। जिसका एक पैर बैड पर मुडा हुआ व एक पैर का पन्जा फर्स पर टिका हुआ था। होशियार सिंह ने बताया कि उसकी लड़की पिंकी को सोनु व उसकी माता जगवन्ती ने काफी तंग व परेशान किया है और कल भी शाम को इन दोनो ने पिंकी के साथ मारपीट की थी। जिससे कारण इन दोनो से तगं आकर पिंकी ने फांसी लगाकर आत्म हत्या की है। होशियार सिंह ने ससुराल पक्ष के लोगों पर आरोप लगाया है कि उन्होंने पिंकी को मारकर भी लटकाया हो सकता है। सूचना के बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने मृतका के पिता की शिकायत पर सोनू पति व सास जगवंती के खिलाफ मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। इस बारे में कैरू चौकी प्रभारी एएसआई रविन्द्र ने बताया कि शिक़ायत पर मामला दर्ज कर लिया।

दोस्त के खाते को धोखाधड़ी की रकम डालने का आरोपित दबोचा

भिवानी। थाना साइबर क्राइम पुलिस ने अपने ही दोस्त के बैंक खाते में धोखाधड़ी की रकम डलवाने के मामले में आरोपी को किया गिरफ्तार। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 30 हजार रुपये की राशि बरामद की है। दीपक निवासी सुई ने थाना साइबर क्राइम पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी, जिसमें शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि 16 फरवरी को उसके साथ आईटीआई में पढ़ने वाला उसका दोस्त का कपिल मिला था जिसके साथ उसका दोस्त रिंकू भी था, जिन्होंने बताया कि वह फाइनेंस का काम करते हैं और उन्हें कुछ रुपए मंगवाने हैं जो आरोपियों ने झूठ बोलकर धोखाधड़ी करके शिकायतकर्ता के बैंक खाता में धोखाधड़ी की रकम को डलवाया था जो इस शिकायत पर पुलिस ने संबंधित धाराओं के तहत अभियोग थाना साइबर क्राइम भिवानी में दर्ज किया था। अभियोग में प्रभावी कार्रवाई करते हुए थाना साइबर क्राइम भिवानी के मुख्य सिपाही रफीक ने इस मामले में आरोपी को जोधपुर राजस्थान से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की थी। आरोपी की पहचान रिंकू पुत्र कर्मबीर निवासी पिचोपा कला, जिला चरखी दादरी के रूप में हुई है।

नकली सोना देकर ठगी करने का आरोपित किया गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

पुलिस की सीआईए स्टाफ प्रथम भिवानी की टीम ने अधिवक्ता को नकली सोना बेचकर लाखों रुपए की धोखाधड़ी करने के मामले में दूसरे आरोपी को नई दिल्ली से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार अधिवक्ता कुलदीप निवासी भिवानी ने थाना सिविल लाइन पुलिस को एक शिकायत दर्ज करवाई थी, जिसमें शिकायतकर्ता अधिवक्ता ने बताया कि 25 फरवरी को दोपहर के समय कोर्ट से अपने घर के लिए जा रहे थे जो रास्ते में उन्हें हुड्डा पार्क भिवानी के पास एक व्यक्ति मिला था, जिसने उनसे पहले डाकखाने का पता पूछा इसके बाद अधिवक्ता से बताया कि वह पुराने मकान तोड़ने का काम करता है और उसके पास कुछ चांदी के सिक्के व सोने के मणिये है जिन्हें वह किसी को बेचना चाहता है। अधिवक्ता अधिवक्ता ने आरोपी व उसके साथ महिला को 20 लाख रुपए देकर 02 किलो सोना लिया था। जिसको बाद में चेक करवाने पर पाया कि सोना नकली है। पुलिस ने अधिवक्ता को नकली सोना बेचने व लाखों रुपए की धोखाधड़ी के मामले में दूसरे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी की पहचान शंकर निवासी शिव बिहार कॉलोनी नई दिल्ली के रूप में हुई है।

घिकाड़ा व मिर्च गांव में पेयजल संकट गहराया

दो गांवों के लोगों ने जलघर पर लगाया ताला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

लंबे समय से पेयजल किल्लत से परेशान घिकाड़ा व मिर्च गांव के ग्रामीणों ने घिकाड़ा गांव के जलघर पर ताला लगा दिया और जोरदार नारेबाजी करते हुए धरना दिया। इसके बाद जनस्वास्थ्य विभाग के एसडीओ के आश्वासन के बाद ग्रामीणों ने ताला तो खोल दिया, लेकिन दो दिन में समाधान नहीं होने पर दोबारा ताला लगाने का अल्टीमेटम दिया।

भिवानी। जलघर पर ताला लगाकर धरना देते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

उल्लेखनीय है कि घिकाड़ा और मिर्च गांव में घिकाड़ा जलघर से पानी की सप्लाई होती है। निर्माण कार्य के चलते नहर से जलघर में पानी भरने वाली पाइप लाइन को कुछ समय पर उखाड़ दिया गया था। पाइप लाइन उखाड़ने के बाद जलघर में पानी नहीं डाला, जिसकारण दोनों गांवों में पेयजल किल्लत बनी हुई है। शनिवार को घिकाड़ा के सरपंच विपिन के नेतृत्व में दोनों गांवों के ग्रामीण एकत्रित हुए और कर्मचारियों को बाहर निकालकर ताला लगा दिया। इसके बाद जलघर परिसर में धरना दिया। सरपंच विपिन ने बताया कि जलघर के लिए डाली गई पाइप लाइन लंबे समय से उखाड़ हुई है, जिसके कारण जलघर का टैंक सूखा पड़ा है और दोनों गांव में पानी की किल्लत विकराल रूप ले चुकी हैं। कई बार विभाग के अधिकारियों को शिकायत की गई, लेकिन कोई सुनवाई नहीं कर रहा। मजबूरीवश दोनों गांव के ग्रामीणों को ताला लगाना पड़ा है। जलघर पर ताला लगाने की सूचना के बाद जनस्वास्थ्य विभाग के एसडीएओ मुकेश कुमार मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों ने एसडीओ को बताया कि पाइप लाइन उखाड़ने के बाद जलघर सूखा पड़ा है। पीने के पानी की भारी समस्या बनी हुई है। एसडीओ ने ग्रामीणों को जल्द समाधान करने का आश्वासन दिया। एसडीओ के आश्वासन के बाद ताला तो खोल दिया, लेकिन ग्रामीणों ने दो दिन में समाधान नहीं होने पर दोबारा ताला लगाने का अल्टीमेटम दे दिया।

अवैध खनन से जुड़ी गतिविधियों पर की जा रही 24 घंटे निगरानी, व्हाट्सएप नंबर किया जारी

भिवानी। उपायुक्त महावीर कौशिक ने कहा है कि जिला में अवैध खनन पर अंकुश लगाने और इस प्रकार की अवैध गतिविधियों में संलिप्त लोगों से निपटने के लिए राज्य सरकार द्वारा योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मॉनिटरिंग के लिए अलग-अलग स्तरों पर टीम में 24 घंटे सातों दिन कार्य कर रही है। महावीर कौशिक ने कहा कि जिला भिवानी में अवैध खनन पर अंकुश लगाने के लिए जिला टास्क फोर्स से जुड़ी टीमें लगातार वाहनों की चेकिंग कर रही है। इसके अलावा हरियाणा राज्य प्रवर्तन ब्यूरो की टीम द्वारा भी कड़ी निगरानी की जा रही है । महावीर कौशिक ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी व खनन विभाग के महानिदेशक केएम पांडुरंग के स्पष्ट निर्देश है कि अगर कोई व्यक्ति अवैध खनन से जुड़ी गतिविधियों में संयुक्त पाया जाता है तो उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाए। उन्होंने कहा कि अवैध खनन से जुड़ी तमाम गतिविधियों पर कड़ी निगरानी का कार्य जारी है ।आज भी जिला टास्क फोर्स की टीमों द्वारा अलग-अलग स्थान पर वाहनों की चेकिंग की गई। उन्होंने आमजन से भी अवध खनन पर प्रभावी तरीके से अंकुश लगाने के लिए सहयोग देने का आह्वान किया है। उपायुक्त महावीर कौशिक ने कहा कि हरियाणा राज्य प्रर्वतन ब्यूरो द्वारा व्हाट्सएप नंबर 9878380112 जारी किया गया है ।

जल्द पूरे कर लें टैक्स से जुड़े कुछ जरूरी काम वरना लगेगा जुर्माना

सुझाव | बिजनेस डेस्क

मार्च का महीना समाप्त होने वाला है और इसके साथ ही वित्तीय वर्ष 2024-25 (वित्त वर्ष 25) भी अपने अंतिम चरण में है। इस महीने के खत्म होते ही कई टैक्स से जुड़ी अहम समय-सीमाएं भी पूरी हो जाएंगी, जिनमें टीडीएस भुगतान, आईटीआर फाइलिंग और अन्य टैक्स दायित्व शामिल हैं। ऐसे में किसी भी तकनीकी गड़बड़ी या पेनल्टी से बचने के लिए समय पर सभी टैक्स संबंधित कार्य पूरे कर लेना बेहद जरूरी है। टैक्सपेयर्स के लिए जरूरी है कि वे महत्वपूर्ण टैक्स डेडलाइंस पर नज़र रखें, जिससे सभी दायित्वों को सही समय पर पूरा किया जा सके और अंतिम समय की परेशानी से बचा जा सके। मार्च में कई अहम टैक्स डेडलाइंस हैं, जिन पर ध्यान देना जरूरी है। मार्च 2025 में कई अहम टैक्स डेडलाइन्स आ रही हैं, जिनका पालन करना जरूरी है। समय पर टैक्स भरने से पेनल्टी और अन्य दिक्कतों से बचा जा सकता है। इस रिपोर्ट में जानते हैं इस महीने की प्रमुख टैक्स समय-सीमाएं।

15 मार्च: एडवांस टैक्स और फॉर्म 24 जी

असेसमेंट ईयर 2025-26 के लिए एडवांस टैक्स की चौथी और आखिरी किस्त भरने की अंतिम तारीख 15 मार्च है। जो टैक्सपेयर्स प्रेजम्पटिव टैक्सेशन स्कीम (सेक्शन 44एडी/44एडीए) के तहत आते हैं, उन्हें पूरे साल का एडवांस टैक्स 15 मार्च तक भरना होगा। सरकारी दफ्तरों को, जिन्होंने फरवरी में बिना चालान के टीडीएस/टीसीएस काटा है, उन्हें इस दिन तक फॉर्म 24जी जमा करना होगा।

17 मार्च: टीडीएस सर्टिफिकेट

सेक्शन 194-आईए, 194-आईबी और 194एस के तहत जनवरी 2025 में काटे गए टीडीएस का सर्टिफिकेट जारी करने की आखिरी तारीख 17 मार्च है।

30 मार्च: चालान-कम-स्टेटमेंट

फरवरी 2025 के लिए सेक्शन 194-आईए, 194-आईबी, 194एम और 194एस के तहत काटे गए टैक्स की रिपोर्टिंग चालान-कम-स्टेटमेंट के जरिए करनी होगी। इसकी अंतिम तारीख 30 मार्च है।

31 मार्च: फॉर्म 3सीईएडी, फॉर्म 67 और अपडेटेड आईटीआर

-फॉर्म 3सीईएडी : मल्टीनेशनल कंपनियों को फाइनेंशियल ईयर 2023-24 के लिए कंट्री बाई कंट्री फाइल करनी होगी। यह रिपोर्ट पैरेंट एंटिटी या भारत में किसी अल्टरनेटिव रिपोर्टिंग एंटिटी द्वारा सबमिट की जा सकती है। अगर पैरेंट एंटिटी सेक्शन 286(2) के तहत छूट प्राप्त है या किसी ऐसे देश में स्थित है जहां भारत के साथ टैक्स जानकारी साझा करने का समझौता नहीं है, तो कंपनी की अन्य संबंधित एंटिटी यह रिपोर्ट फाइल कर सकती है।

फॉर्म 67

अगर किसी टैक्सपेयर ने 2022-23 के लिए फॉरिजन टैक्स क्रेडिट का दावा किया है, तो उन्हें यह फॉर्म 31 मार्च तक भरना होगा। यह उन लोगों के लिए जरूरी है, जिन्होंने सेक्शन 139(1) या 139(4) के तहत समय पर अपना इनकम टैक्स रिटर्न फाइल किया था।

अपडेटेड आईटीआर

असेसमेंट ईयर 2022-23 के लिए अपडेटेड इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने की आखिरी तारीख भी 31 मार्च है।

नोट : इन जरूरी तारीखों को ध्यान में रखते हुए टैक्सपेयर्स को सभी दस्तावेज समय पर फाइल कर लेने चाहिए, ताकि किसी भी तरह की पेनल्टी या लीगल कार्रवाई से बचा जा सके।

ऐसे करें निवेश, चक्रवृद्धि ब्याज का जादू दिखाएगा कमला, सात पुश्तें भी जिंदगीभर बैठकर खाएंगी

एसडब्ल्यूपी निवेश का बेहतरीन फॉर्मूला, भविष्य होगा चकाचक

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- बिना काम किए जिंदगीभर एक निश्चित रकम आती रहेगी
- एक करोड़ के बन जाएंगे तीस करोड़, सभी खर्चें होंगे पूरे

इसका सबसे अच्छा तरीका एसडब्ल्यूपी है। जैसे एसआईपी होता है, उसका उलट एसडब्ल्यूपी है। आपको एसडब्ल्यूपी के जरिए किसी म्यूचुअल फंड में एक करोड़ रुपये निवेश करने होंगे। फिर वहां से आप हर महीने अपने खर्चे लायक एक फिक्स रकम निकाल सकते हैं। इसके बाद भी ये एक करोड़ लगातार बढ़ते रहेंगे। धीरे-धीरे यह रकम इतनी बढ़ जाएगी कि सात पुश्तों तो क्या, इसके आगे की पीढ़ी भी घर बैठकर खाती रहेगी।

अगर आपके पास बड़ी रकम है और चाहते हैं कि बिना काम किए जिंदगीभर एक निश्चित रकम आती रहे तो यह संभव है। इसके लिए आपको एक प्लान के तहत निवेश करना होगा। इससे आपका और आपके बच्चों तक का भविष्य सुरक्षित हो जाएगा। आपकी सात पुश्तें भी आराम से बैठकर खा सकती हैं। आपको इसके लिए लक्ष्य तय कर निवेश करना होगा। ऐसे निवेश के लिए सबसे बेहतर तरीका एसडब्ल्यूपी है। यह एसआई के विपरीत अच्छा मुनाफा देने में सक्षम है। इस योजना में आपको चक्रवृद्धि ब्याज का जादू देखने को मिलेगा और आप मालामाल हो जाएंगे और कमाने के लिए बाहर नही जाना पड़ेगा बिना कुछ किए ही एक निश्चित रकम आपको हर महीने मिलती रहेगी। ऐसा बिलकुल संभव है इसे संभव बनाता है म्यूचुअल फंड। इसमें बड़ी रकम निवेश करके न केवल आप बल्कि आपकी सात पुश्तें भी जिंदगीभर बैठकर खा सकती हैं। काफी लोग ऐसे हैं जिनके पास काफी पैसा है। वह उस पैसे को कई जगह निवेश करते हैं। काफी ऐसी स्कीम हैं, जिनमें एक फिक्स रिटर्न मिलता है। इनमें एफडी, एनपीएस शामिल हैं। हालांकि इनसे मिलने वाला रिटर्न काफी कम होता है। वहीं, अगर आपके पास एक करोड़ रुपये हैं तो इससे न केवल आप बल्कि आपकी सात पुश्तें भी जिंदगीभर बैठकर खा सकती हैं, लेकिन इसके लिए इस एक करोड़ रुपये को भी सही जगह निवेश करना होगा।

कैसे काम करता है एसडब्ल्यूपी

हर म्यूचुअल फंड सालाना कुछ न कुछ रिटर्न देता है। डेटा के मुताबिक सालाना रिटर्न 15 फीसदी या इससे ज्यादा तक मिलता है। जब आप एक करोड़ रुपये किसी म्यूचुअल फंड में निवेश करेंगे तो इस पर भी आपको रिटर्न मिलेगा। जानकारों के मुताबिक एसडब्ल्यूपी में सालाना रिटर्न 8 फीसदी से ज्यादा मानकर नहीं चलना चाहिए। हालांकि रिटर्न इससे ज्यादा मिल सकता है। ऐसे में न केवल आप हर महीने कुछ रकम निकाल सकेंगे, बल्कि आपकी रकम भी बढ़ती जाएगी।

हर महीने कितने रुपये मिलेंगे

एसडब्ल्यूपी के दौरान आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि वर्षों तक के लिए आप हर महीने बहुत ज्यादा रकम नहीं निकाल सकते। मान लें कि कोई म्यूचुअल फंड 8 फीसदी सालाना रिटर्न दे रहा है। इसमें एक करोड़ रुपये निवेश करके आप हर महीने 50 हजार रुपये जिंदगीभर निकाल सकते हैं। अगर आप 30 साल तक 50 हजार रुपये महीने निकालते हैं तब भी 30 साल बाद भी आपकी यह रकम बढ़कर 3 करोड़ रुपये से ज्यादा की बचेगी।

कैसे कमाई करेंगी सात पुश्तें

चूंकि आपके पास अभी 3 करोड़ रुपये हैं। आप चाहें तो जिंदगीभर हर महीने 50 हजार या इससे ज्यादा की रकम और ले सकते हैं। मान लें कि आप ये 30 करोड़ रुपये अपने बच्चों के लिए छोड़ जाते हैं। 30 साल बाद महंगाई बढ़ेगी। साथ ही म्यूचुअल फंड का रिटर्न भी बढ़ने की उम्मीद रहेगी। अगर आपकी पीढ़ी उन 3 करोड़ रुपये को किसी ऐसे म्यूचुअल फंड में निवेश करती है जो 10 फीसदी सालाना का रिटर्न दे रहा हो। तो ऐसे में आपकी वह पीढ़ी 30 साल तक एक लाख रुपये महीने निकाल सकती है। इसके बाद भी ये 3 करोड़ रुपये बढ़कर 30 करोड़ रुपये से ज्यादा हो चुके होंगे। ऐसे ही अगली पीढ़ी भी इस रकम का इस्तेमाल कर सकेगी।

चक्रवृद्धि ब्याज का चलता है जादू

एसडब्ल्यूपी में चक्रवृद्धि ब्याज का जादू चलता है। जानकार कहते हैं कि म्यूचुअल फंड में लॉन्ग टर्म निवेश करने पर ज्यादा फायदा मिलने की उम्मीद होती है। ऐसे में कुल रकम मूल रकम से कहीं ज्यादा हो जाती है। ऊपर के उदाहरणों में हमने बताया है कि किस प्रकार एक करोड़ रुपये की रकम 30 करोड़ रुपये हो गई, वह भी तब जब उसमें से हर महीने कभी 50 हजार तो कभी एक लाख रुपये निकलते रहे। म्यूचुअल फंड में निवेश करने से पहले किसी जानकार की सलाह जरूर लें।

वॉरेन बफे की ये 5 बातें बच्चों को जरूर सिखाएं, पैसों की कभी नहीं होगी तंगी

बच्चों को कारोबार शुरू करने में भी मिलेगी मदद, वित्तीय शिक्षा जल्दी शुरू करने के फायदों पर बफे का जोर

छोटी बचत से बढ़ती संपत्ति और स्मार्ट खर्च की आदतें विकसित करें

जानकारी | बिजनेस डेस्क

यह शो 26 एपिसोड तक चला। इसमें कुछ बच्चों की कहानी दिखाई गई जो पैसे के मामलों में बफे से सलाह लेते थे। साल 2013 में उन्होंने एक कार्यक्रम में कहा था कि बच्चों को पैसों के बारे में समझाना कभी भी जल्दी नहीं होता। चाहे वो नए खिलौने की कीमत समझना हो या पैसे बचाने का महत्व। यहां 5 ऐसी बातें दी गई हैं जिन्हें बफे ने अपने बच्चों को सिखाया था। आप भी अपने बच्चों को ये बातें सिखा सकते हैं।

वॉरेन बफे दुनिया के अमीर लोगों में शुमार हैं। उन्होंने धैर्य, स्मार्ट निवेश और आर्थिक अनुशासन के सिद्धांतों पर अपना भाग्य बनाया है। बफे सिर्फ अपने बिजनेस में ही कामयाब नहीं हैं, बल्कि बच्चों को पैसे के बारे में महत्वपूर्ण सबक सिखाने को भी प्राथमिकता देते हैं। साल 2011 में बफे ने सीक्रेट मिलिनेयर्स क्लब नामक एक एनिमेटेड सीरीज बनाने में मदद की। इसका उद्देश्य बच्चों को व्यवसाय, निवेश और वित्तीय साक्षरता की मूल बातें सिखाना था। यह शो 26 एपिसोड तक चला। इसमें कुछ बच्चों की कहानी दिखाई गई जो पैसे के मामलों में बफे से सलाह लेते थे। साल 2013 में उन्होंने एक कार्यक्रम में कहा था कि बच्चों को पैसों के बारे में समझाना कभी भी जल्दी नहीं होता। चाहे वो नए खिलौने की कीमत समझना हो या पैसे बचाने का महत्व। यहां 5 ऐसी बातें दी गई हैं जिन्हें बफे ने अपने बच्चों को सिखाया था। आप भी अपने बच्चों को ये बातें सिखा सकते हैं।

जल्दी शुरुआत करें

बफे हमेशा कम उम्र से ही वित्तीय शिक्षा के महत्व पर जोर देते रहे हैं। साल 2013 में एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा था, 'कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों के किशोरावस्था में पहुंचने पर ही पैसे का सही इस्तेमाल करने के बारे में बात करना शुरू करते हैं। जबकि वे प्री-स्कूल से ही शुरू कर सकते हैं।' कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी की एक स्टडी के मुताबिक बच्चे 7 साल की उम्र से ही पैसे से जुड़ी आदतें विकसित करने लगते हैं। कम उम्र में ही बच्चों को बचत, खर्च और कमाई जैसी बुनियादी बातें बताकर पेरेंट्स उन्हें दीर्घकालिक वित्तीय सफलता के लिए तैयार कर सकते हैं।

छोटी-छोटी बचत का भी महत्व

बफे सिखाते हैं कि ब्याज की शक्ति के कारण समय के साथ छोटी-छोटी बचत भी बढ़ सकती है। सीक्रेट मिलिनेयर्स क्लब में बफे ने कहा है कि नियमित रूप से थोड़े से पैसे बचाने से भी फायदा होता है। इस सबक को सिखाने का एक व्यावहारिक तरीका बच्चों को उनका अपना गुल्लक या बैंक अकाउंट देना है। पैरेंट्स ऐसे ऐप्स भी इस्तेमाल कर सकते हैं जिनसे बच्चे अपनी बचत पर नजर रख सकें और जमा राशि पर ब्याज भी कमा सकें।

स्मार्ट खर्च करने की आदत डालें

बच्चों को सबसे पहले यह सीखना चाहिए कि जरूरतों और चाहतों में अंतर कैसे करें। बफे एक आसान तरीका बताते हैं कि अपने बच्चों से उन चीजों की सूची बनाने को कहें जो वे खरीदना चाहते हैं। फिर, हर चीज को एक साथ देखें और तय करें कि यह जरूरी है या फिजूलखर्ची। यह आदत जल्दी डालने से माता-पिता अपने बच्चों को बड़े होने पर बेहतर खर्च करने की आदतें विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

स्किल निखारकर संपत्ति बढ़ाएं

बफे खुद जीवन भर सीखते रहे। वह अक्सर सेल्फ स्टडी के महत्व पर जोर देते हैं। सीक्रेट मिलिनेयर्स क्लब के एक एपिसोड में उन्होंने कहा है कि सबसे अच्छा निवेश जो आप कर सकते हैं वह खुद में है। जितना अधिक आप सीखेंगे, उतना ही अधिक आप कमाएंगे। बफेट खुद रोजाना कई अखबार पढ़ते हैं और बच्चों को ज्ञान के प्रति जुनून विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। निरंतर सीखना लॉन्ग टर्म के लिए वित्तीय सफलता की कुंजी है। बफे ने सिर्फ छह साल की उम्र में च्यूइंग गम और कोक की बोतलें बेचकर पैसा कमाना शुरू कर दिया था। बच्चों को अपने खुद के बिजनेस आइडिया तलाशने के लिए प्रोत्साहित करें। फिर चाहे वह नींबू पानी का स्टॉल हो या ऑनलाइन स्टोर। इससे बच्चों को वित्तीय सिद्धांतों को जल्दी समझने में मदद मिलती है। पैरेंट्स मार्गदर्शन और यहां तक कि छोटा बिजनेस शुरू करने में मदद करने के लिए शुरुआती पैसा देकर बच्चों को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

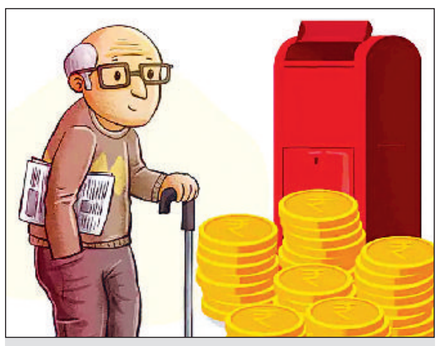

सीनियर सिटिजन्स सेविंग्स स्कीम में टैक्स छूट और बेहतर रिटर्न

बिजनेस डेस्क

वित्त वर्ष 2024-25 का आखिरी महीना यानी मार्च शुरू हो चुका है। इस महीने आपको कई जरूरी काम निपटाने हैं। इन्हीं कामों में से एक है वित्त वर्ष 2024-27 के लिए टैक्स सेविंग इन्वेस्टमेंट। ये इन्वेस्टमेंट आपको 31 मार्च 2024 तक करना है। अगर आप सीनियर सिटिजन हैं और सेफ इन्वेस्टमेंट के साथ टैक्स भी बचाना चाहते हैं तो पोस्ट ऑफिस सीनियर सिटिजंस सेविंग्स स्कीम अकाउंट (एससीएसएस) में पैसा लगा सकते हैं। इस स्कीम में अभी 8.20% सालाना ब्याज दिया जा रहा है। इस योजना में निवेश कर आप टैक्स भी बचा सकते हैं और अच्छा रिटर्न भी प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए इसमें निवेश करना आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकता है।

अधिकतम 30 लाख रुपये कर सकते हैं निवेश

पोस्ट ऑफिस सीनियर सिटिजंस सेविंग्स स्कीम के तहत सिर्फ 1000 रुपये में अकाउंट खोला जा सकता है। इस स्कीम में ज्यादा से ज्यादा 30 लाख रुपये तक निवेश कर सकते हैं। इस स्कीम पर 8.2% सालाना ब्याज मिल रहा है। वहीं देश के सबसे बड़े बैंक एसबीआई 5 साल की फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) पर सीनियर सिटिजंस को 6.50% ब्याज दे रहा है। यानी इस स्कीम में एफडी से ज्यादा ब्याज दिया जा रहा है।

5 साल का मैच्योरिटी पीरियड

इस स्कीम का मैच्योरिटी पीरियड 5 साल का रहता है। यानी इस स्कीम में आपको 5 साल के लिए निवेश करना होता। हालांकि आप 5 साल से पहले भी अकाउंट बंद कर सकते हैं, लेकिन ऐसा करने पर आपको पेनल्टी देनी होती है।

इनकम टैक्स छूट का मिलता है लाभ

इस योजना में निवेश करने पर इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80C के तहत आप अपनी कुल आय से 1.5 लाख रुपये की कटौती का दावा कर सकते हैं। आसान भाषा में इसे ऐसे समझें, आप सेक्शन 80C के माध्यम से अपनी कुल कर योग्य आय से 1.5 लाख तक कम कर सकते हैं।

तिमाही आधार पर मिलता है ब्याज

इस योजना के तहत ब्याज तिमाही आधार पर मिलता है और अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर व जनवरी के पहले वर्किंग डे को क्रेडिट कर दिया जाता है। सीनियर सिटीजन्स सेविंग्स स्कीम अकाउंट किसी भी पोस्ट ऑफिस में खुलवा सकते हैं। 60 साल या उससे अधिक उम्र के बाद अकाउंट पोस्ट ऑफिस जाकर खुलवाया जा सकता है। हालांकि वीआरएस लेने वाला व्यक्ति जो 55 वर्ष से अधिक लेकिन 60 वर्ष से कम है वो भी इस अकाउंट को खोल सकता है। इसके अलावा डिफेंस (रक्षा विभाग) से रिटायर्ड हुए हो वो 50 साल से अधिक और 60 वर्ष से कम उम्र के लोग भी इस योजना में निवेश कर सकते हैं। हालांकि इस स्थिति में रिटायर होने के 1 महीने के भीतर निवेश करना होता है।

कितना फायदा होगा

अगर आप इस योजना में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो 5 साल बाद आपको कुल 1 लाख 50 हजार रुपए मिलेंगे। वहीं 2 लाख रुपये का निवेश करने पर 3 लाख रुपये मिलेंगे।

फरवरी में घटे म्यूचुअल फंड में निवेश, जनवरी के मुकाबले 2% की गिरावट

काम की बात | बिजनेस डेस्क

- म्यूचुअल फंड एसआईपी में पैसा लगाने वालों की संख्या घटी, फरवरी में एसआईपी में 25,999 करोड़ रुपये आए
- यह पिछले तीन महीनों में सबसे कम

शेयर बाजार में पिछले कुछ महीनों से लगातार गिरावट ही गिरावट का दौर जारी है। इससे सभी निवेश माइनस में हैं। इससे सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान या एसआईपी के जरिए निवेश करने वालों की संख्या में भी कमी हुई है। जी हां, बीते फरवरी महीने में एसआईपी के जरिए निवेश थोड़ा कम हुआ है। इस साल जनवरी में जहां एसआईपी के जरिए 26,400 करोड़ रुपये का निवेश आया था, वहीं फरवरी में यह घटकर 25,999 करोड़ रुपये रह गया। यह तीन महीने का सबसे कम है। दिसंबर में भी इस तरीके से 26,459 करोड़ रुपये का निवेश आया था। यह जानकारी एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया या एम्फी के आंकड़ों से मिली है।

एम्फी के आंकड़ों में हुआ खुलासा, कम दिलचस्पी दिखा रहे निवेशक

म्यूचुअल फंड के कितने फोलियो

फरवरी 2025 तक म्यूचुअल फंड के कुल फोलियो या खाते 23,22,80,804 हो गए हैं। रिटेल म्यूचुअल फंड खातों (इक्विटी + हाइब्रिड + सॉल्यूशन-ओरिएंटेड स्कीम्स) की संख्या फरवरी में बढ़कर 18,42,02,267 हो गई, जो जनवरी में 18,22,23,078 थी। रिटेल एयूएम (इक्विटी + हाइब्रिड + सॉल्यूशन-ओरिएंटेड स्कीम्स) फरवरी में घटकर 36,44,112 करोड़ रुपये रह गया, जबकि जनवरी में यह 38,77,595 करोड़ रुपये था। मतलब बाजार में उतार-चढ़ाव का असर दिखा है।

फरवरी में भी बढ़े सिप अकाउंट

फरवरी 2025 में 44,56,425 नए एसआईपी रजिस्टर हुए। इस महीने एसआईपी का कुल एयूएम 12,37,783.57 करोड़ रुपये रहा। इसमें 8.26 करोड़ एसआईपी खाते नियमित रूप से योगदान दे रहे थे। फरवरी 2025 में 29 नई स्कीम्स लॉन्च हुईं, जिनसे कुल मिलाकर 4,029 करोड़ रुपये जुटाए गए। ये स्कीम्स अलग-अलग कैटेगरी की थीं।

म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में मजबूती

एम्फी के चीफ एक्जीक्यूटिव वेंकट चलसानी ने बताया, भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री लगातार मजबूती दिखा रही है। सभी कैटेगरी में निवेशक लगातार पैसा लगा रहे हैं। उनका कहना है ३बाजार में उतार-चढ़ाव के बावजूद, निवेशकों का भरोसा बना हुआ है। 40,063 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो इस बात का सबूत है कि निवेशक लंबी अवधि के लिए निवेश करने में यकीन रखते हैं।

फरवरी में एयूएम में क्यों हुई गिरावट

उन्होंने बताया कि जनवरी से फरवरी में एयूएम में गिरावट की मुख्य वजह इक्विटी फंड में मार्केट का उतार-चढ़ाव है। लेकिन एसआईपी में निवेश लगातार आ रहा है, जिससे पता चलता है कि लोग अब भी नियमित निवेश को तरजीह दे रहे हैं। चलसानी ने निवेशकों को शिक्षित करने और जागरूकता फैलाने के लिए एम्फी की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने हर तरह के बाजार में वित्तीय अनुशासन के महत्व पर जोर दिया।

नेट इनफ्लो में गिरावट

फरवरी महीने के दौरान म्यूचुअल फंड में कुल नेट इनफ्लो 79% गिर गया। इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश 26% घटकर 29,303 करोड़ रुपये रह गया, जबकि जनवरी में यह 39,687 करोड़ रुपये था। डेट म्यूचुअल फंड में फरवरी में 6,525 करोड़ रुपये का आउटफ्लो हुआ, जबकि जनवरी में 1.28 लाख करोड़ रुपये का इनफ्लो हुआ था।

क्या है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड की परिभाषा एक ऐसा निवेश है जो आपके पैसे को कई अन्य लोगों के पैसे के साथ जोड़ता है जो समान निवेश लक्ष्य साझा करते हैं। पेशेवर मनी मैनेजर्स पैसे के पूल का उपयोग सिक्योरिटीज खरीदने के लिए करते हैं जो म्यूचुअल फंड के निर्दिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। म्यूचुअल फंड एक उपयुक्त रिटायरमेंट निवेश हो सकता है क्योंकि वे पेशेवर प्रबंधन और विविधीकरण प्रदान करते हैं। वे एफडीआईसी बीमाकृत नहीं हैं और उनमें निवेश जोखिम शामिल हैं, जिसमें मूलधन की संभावित हानि और मूल्य में उतार-चढ़ाव शामिल है।

म्यूचुअल फंड के प्रकार

इक्विटी (स्टॉक) फंड : ये वे फंड हैं जो सार्वजनिक रूप से कारोबार करने वाली कंपनियों के कॉर्पोरेट स्टॉक में निवेश किए जाते हैं। इन फंडों को कंपनी के आकार, उद्योग या क्षेत्र के प्रकार या संभावित विकास और मूल्य सहित विभिन्न घटकों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

बॉन्ड फंड : ये ऋण साधनों से बने होते हैं जिन्हें सरकार या निगम निवेशकों को पूंजी जुटाने के लिए जारी करते हैं। वे अक्सर स्टॉक फंड की तुलना में कम जोखिम उठाते हैं। हालांकि, उनमें वृद्धि की संभावना कम हो सकती है।

मनी मार्केट फंड : इस प्रकार के म्यूचुअल फंड सरकार या निगमों जैसी संस्थाओं से नकदी या नकदी-समतुल्य अल्पकालिक ऋण में निवेश करते हैं। मनी मार्केट फंड को आम तौर पर कम जोखिम वाला निवेश माना जाता है।

हाइब्रिड फंड : हाइब्रिड फंड में कम से कम दो या उससे ज्यादा एसेट क्लास शामिल होते हैं - आम तौर पर स्टॉक और बॉन्ड का मिश्रण। हाइब्रिड फंड के सबसे लोकप्रिय रूपों में से एक को बैलेंस्ड फंड कहा जाता है, जो एक प्रकार का पोर्टफोलियो है जो 60% स्टॉक में और 40% बॉन्ड में निवेश करता है।

खबर संक्षेप

प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे प्रहलाद सिंह

भिवानी। हरियाणा के पूर्व प्रशासनिक अधिकारी प्रहलाद सिंह ने गरीब परिवार में जन्म लेकर पूरा जीवन सच्ची लगन, निष्ठा के साथ गरीबों की सेवा में लगाया, ये बात पूर्व न्यायाधीश प्रहलाद सिंह के 92 जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि आचार्य रमेश मिश्र ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय प्रहलाद सिंह ने एक गरीब परिवार में जन्म लेकर प्रदेश के विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहकर आमजन की सेवा की।

केंद्रीय विद्यालय के प्रागंण में होली उत्सव मनाया

भिवानी। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय पालुवास में आज होली का उत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों और छात्रों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। उत्सव के दौरान विद्यालय का परिसर रंगों से रंग गया और सभी ने एक दूसरे को रंग लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं। प्राचार्य मोहिंदर सिंह ने कहा, होली का त्योहार हमें एकता, प्रेम और सौहार्द की भावना को बढ़ावा देने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

जिलेभर में मनाया विश्व उपभोक्ता दिवस

भिवानी। उपायुक्त महावीर कौशिक के कुशल मार्गदर्शन में सरकार द्वारा जारी हिदायतों के अनुसार आज शनिवार को खाद्य एवं आपूर्ति विभाग द्वारा जिला भर में विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाया गया। डीसी महावीर कौशिक ने कहा कि विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति शिक्षित करना और जागरुकता फैलाना है।

दिव्यांग पेंशन देने का लिया निर्णयः उपायुक्त

भिवानी। उपायुक्त महावीर कौशिक ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व वाली राज्य सरकार द्वारा 21 गंभीर बीमारियों से पीड़ित पात्र लोगों को दिव्यांग पेंशन उपलब्ध करवाने का फैसला लिया है। राज्य सरकार के इस निर्णय की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि इसके लिए आवेदक की आयु 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए तथा वह हरियाणा का निवासी एवं आवेदन करते समय तीन वर्ष से हरियाणा में रह रहा हो।

क्रिकेट मैच में मुंढाल ने धनाना को हराया

बवानी खेड़ा। क्षेत्र के निकटवर्ती गांव पर में सर्व कल्याण मंच द्वारा करवाई जा रही पहले जिला स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता में मुंढाल की टीम ने डाणा धनाना को हरा कर अगले दौर में पहुंची।

अमृतमयी श्री रामकथा का आयोजन कल से

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा के सुप्रसिद्ध बाबा कमाल मंदिर में श्री राम चरित मानस अमृतमयी श्री रामकथा का आयोजन किया जाएगा। ये आयोजन 17 मार्च से 25 मार्च तक दोपहर 2 से सांय 6 बजे तक चलेगा। इसमें कथा वाचक श्रीधाम सेवा ट्रस्ट वृंदावन से राजकृष्ण शास्त्री संगतों को निहाल करेंगे।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज शाखा सिद्धिधाम में आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन

होली नकारात्मकता को जलाने व पवित्रता को जागृत करने का प्रतीकः बीके सुमित्रा

भिवानी। श्रद्धालुओं को प्रवचन देती बीके बहनें। फोटो : हरिभूमि

भारतीय त्योहारों में कुछ भी बिना कारण नहीं होता,सबका आध्यात्मिक संबंध: सुमित्रा

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भारतीय त्यौहारों में कुछ भी बिना कारण नहीं होता, होली शिवरात्रि के बाद आती है और ये क्रम एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक संबंध प्रकट करता है, ये बात प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज शाखा सिद्धिधाम प्रमुख राजयोगिनी बीके सुमित्रा बहन ने होली पर्व के आध्यात्मिक रूप के बारे में उपस्थित ब्रह्मावत्सों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि महाशिवरात्रि, परमात्मा शिव के अवतरण का महोत्सव है, ये वह समय है जब अज्ञानता के घने अंधकार में भटकती आत्माओं को दिव्य बोध प्राप्त होता है, जब काम, क्रोध, लोभ, अहंकार जैसे विकारों के बंधन से मुक्त होने का द्वार खुलता है। उन्होंने कहा कि परमात्मा शिव के आगमन से आत्मा का आंतरिक रूपांतरण आरंभ होता है और आत्माएं परमात्मा की याद के दिव्य रंग से रंग जाती हैं। बीके सुमित्रा बहन ने बताया कि होली का त्यौहार जो केवल रंगों से खेलने का त्यौहार नहीं है, बल्कि अपने अंदर की नकारात्मकता को जलाने और पवित्रता एवं आनंद को जागृत करने का प्रतीक है। प्राचीन समय में होली की शोभायात्राओं में चैतन्य देवताओं की झांकियां निकाली जाती थी, जो सभी को एक ऐसे विश्व की याद दिलाती थी। बीके आरती बहन ने बताया कि होली केवल बाहरी रंग लगाने का पर्व नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक रंगों में रंगने का भी अवसर है। परमात्मा हमें सिखाते हैं कि सच्चे रंग वे हैं, जो आत्मा को शांति, प्रेम, आनंद और पवित्रता से भर दें। इस अवसर पर बीके भीमसिंह चौहान, बीके सुनील, बीके मनोज, बीके महेश, बीके शारदा, बीके अन्नु, बीके संतोष, बीके कविता तथा मीडिया कॉर्डिनेटर बीके धर्मवीर आदि उपस्थित रहे।

चरखी दादरी। स्नेह मिलन समारोह में होली खेलते ब्रह्मकुमारीज बहन व अन्य।

भारतीय त्योहार सामाजिक रिश्तों को एकता के सूत्र में बांधतेः वसुधा

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

भारतीय संस्कृति व पर्व आध्यात्मिक व मानवीय मूल्यों से भरपूर हैं, जो हमारे सामाजिक रिश्तों को एकता के सूत्र में बांधे हुए हैं। यह उद्गार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की कादमा शाखा में अलौकिक होली व फाग स्नेह मिलन पर लोगों को बधाई देते हुए सेवा केंद्र प्रभारी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी वसुधा बहन ने व्यक्त किए।

इस अवसर पर सेवा केंद्र पर रस्साकसी, म्यूजिकल चेयर, मटकी फोड़ आदि खेलों में भाग लिया। ब्रह्माकुमारीज व राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाऊंडेशन के खेल प्रभाग की हरियाणा राज्य संयोजक ब्रह्माकुमारी वसुधा बहन ने कहा कि खेलों से हमारा सर्वांगीण विकास होता है खेल भी हमें एकाग्रता सद्भावना मानवता का पाठ पढ़ाते हैं। जिससे समाज सुदृढ़ बनता है।

उन्होंने कहा कि हमें हर त्यौहार आध्यात्मिक रहस्य को लिए हुए है। झोझूकलां सेवा केंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन ने कहा कि हमें हर त्योहर पर विशेष अपनी जांच कर अपनी कमी कमजोरी को परमात्मा पिता को अर्पित करनी चाहिए।

तोशाम। खिलाड़ियों के बीच पहुंचे बीसीसीआई के पूर्व कोषाध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी।

क्रिकेट में जूई ने सोरखी की टीम को दी पटकनी

- गोलागढ़ में चौथी चौधरी बंसीलाल क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭ तोशाम

क्षेत्र के गांव गोलागढ़ के चौधरी बंसीलाल क्रिकेट खेल स्टेडियम में पिछले करीबन 25 दिन से चल रही चौथी चौधरी बंसीलाल क्रिकेट प्रतियोगिता का शनिवार को भव्य समापन हुआ। जिसमें फाइनल मुकाबले में जूई की टीम ने सोरखी की टीम को हराते हुए प्रतियोगिता अपने नाम की।

उल्लेखनीय है कि इस प्रतियोगिता का शुभारंभ गत 20 फरवरी को बीसीसीआई के पूर्व कोषाध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी ने किया था। पिछले करीबन 25 दिनों से चल रही इस प्रतियोगिता में दूर दराज के क्षेत्र से आई हुई अनेक टीमों ने भाग लिया था, लेकिन प्रतियोगिता के अंत में फाइनल मुकाबले में गांव जूई तथा सोरखी की टीम पहुंची। इस रोमांचक मुकाबले में जूई की टीम ने सोरखी की टीम को पटखनी देते हुए खिताब अपने नाम किया। वहीं प्रतियोगिता में रनरअप के रूप में सोरखी की टीम दूसरे स्थान पर रही। प्रतियोगिता में प्रथम रहने वाली टीम को अनिरुद्ध चौधरी ने 51000 रुपए के नगद पुरस्कार के साथ ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। वहीं द्वितीय रहने वाली टीम को 31 हजार रुपए तो तृतीय व चतुर्थ स्थान पर रहने वाली टीम को 11-11 हजार रुपए की नगद राशि देकर सम्मानित किया। प्रतियोगिता में मैन ऑफ द सीरीज का खिताब सुमित जूई के नाम रहा।

जूई के सुमित को चुना गया बेस्ट बल्लेबाज

बेस्ट बल्लेबाज के रूप में जूई के सुमित को चुना गया तो बेस्ट फिल्डर के रूप में गोलागढ़ के विशाल को चुना गया। इस मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए अनिरुद्ध चौधरी ने कहा की खिलाड़ी को प्रत्येक खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए। ग्रामीण स्तर पर खिलाड़ियों की कोई कमी नहीं है लेकिन उन्हें अवसर नहीं मिल पाते इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से खिलाड़ियों की प्रतिभा निखर कर सामने आती है वहीं ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों में खेलों के प्रति जुनून भी पैदा होता है।

एकता का संदेश देते हैं पर्वः वर्मा

- युवाओं को सामाजिक एकता एवं संस्कृति का महत्व बताते त्योहारों पर मिलन समारोह : वर्मा

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

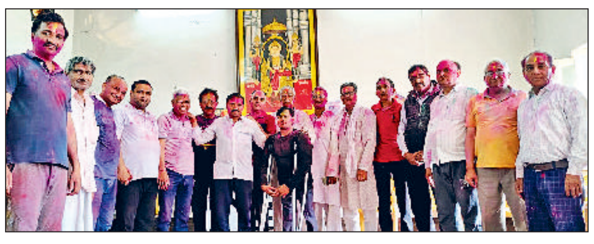

भिवानी। होली मिलन समारोह में मौजूद शहर के गणमान्य लोग। फोटो : हरिभूमि

स्वर्णकार सेवा परिषद द्वारा पतराम गेट स्थित अजमीढ़ भवन में होली मिलन समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य लोगों, संस्थाओं के सदस्यों व क्षेत्रवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, जिसमें सभी ने एक-दूसरे को तिलक लगाकर एवं मिठाईयों का आदान-प्रदान कर प्रेम एवं भाईचारे का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रमों ने समा बांध दिया। इस मौके पर स्वर्णकार सेवा परिषद भिवानी के प्रधान हरिचरण वर्मा व महासचिव अधिवक्ता कुलदीप सोनी ने कहा कि होली मिलन समारोह जैसे कार्यक्रमों में समाज के विभिन्न वर्गों के लोग एकजुट होते है, जो आपसी भाईचारे एवं एकता के संदेश को मजबूती प्रदान करते है। यहीं नहीं होली पर्व हमें देश की सभ्यता और संस्कृति का भी संदेश देता है। उन्होंने कहा कि त्यौहारों पर आयोजित होने वाले मिलन समारोह जैसे कार्यक्रमों से युवा पीढ़ी को एक तरफ जहां सामाजिक एकता व भाईचारे का महत्व पता चलता है तो वही अपनी संस्कृति एवं रीति-रिवाजों से भी रूबरू होने का मौका मिलता है। इस अवसर पर डा. शिलवंत, मनीष वर्मा, अधिवक्ता योगेंद्र, देवदत्त सोनी, अशोक कुमार, प्रवीण सोनी आदि मौजूद रहे।

पुलिस ने तुलसी के पौधें वितरित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया

भिवानी। पुलिस आमतौर पर कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए जानी जाती है, लेकिन इस बार पुलिस कर्मचारियों ने होली के रंगों में हरियाली का अनोखा रंग जोड़कर मनाया। पर्यावरण प्रहरी हवलदार लोकराम नेहरा ने त्रिवेणी बाबा की प्रेरणा से होली पर्व पर शहर में विभिन्न स्थानों पर नागरिकों को तुलसी के पौधें वितरित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। हवलदार लोकराम ने कहा कि यह पहल समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए की गई है। उन्होंने कहा कि होली रंगों का त्योहार है, लेकिन हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष व पार्षदों ने खेली होली

- होली पर अनाज मंडी में लगाया श्रीश्याम दरबार, नवनिर्वाचित अध्यक्ष और पार्षदों संग लोगों ने उड़ाया गुलाल

हरिभूमि न्यूज ⏭ लोहारू

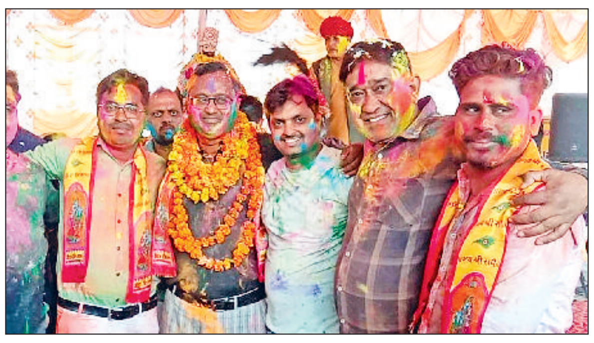

शुक्रवार को धुलंडी का त्योहार शहर और आसपास के गांवों में धूमधाम से मनाया। ग्रामीण इलाके के गांव अहमदवास खेड़ा और सेहर सहित अनेक गांवों में देवर-भाभी के पवित्र रिश्ते की प्रतीक कोरड़ा मार होली खेली गई।

वहीं शहर के मुख्य अनाज मंडी परिसर में श्रीश्याम सेवा समिति द्वारा भगवान श्रीश्याम का दरबार सजाकर फाल्गुन उत्सव की तर्ज वर धुलंडी मनाई गई। इस मौके पर शहर के नव निर्वाचित नगरपालिका प्रधान प्रदीप तायल, पार्षद अंतर सिंह, राजेश सैनी, पार्षद प्रतिनिधि रामबीर, पार्षद महेश गांधी सहित अनेक उम्मीदवारों और अनेक सामाजिक लोगों ने एक दूसरे को रंग लगाया और धमाल पर नृत्य किया। श्रीश्याम सेवा समिति के संस्थापक सुरेश डिडवानिया, संरक्षक राधेश्याम स्वामी और प्रधान लीलाधर और सुभाष स्वामी ने बताया कि होली के त्योहार आपसी प्रेम और भाईचारे का त्योहार है। इस दिन लोग सभी वैरभाव भुलाकर एक दूसरे पर रंग लगाकर आपसी सौहार्द का संदेश देते हैं। होली से पहले ही लोहारू नगरपालिका के अध्यक्ष और 13 वार्ड पार्षद के चुनावों के परिणाम घोषित हुए हैं।

भिवानी। सैनी कल्याण परिषद के होली मिलन समारोह में उपस्थित सदस्य।

सैनी कल्याण परिषद ने मनाया होली मिलन समारोह

भिवानी। नेहरू पार्क के सामने सैनी धर्मशाला में सैनी प्रधान भूपसिंह सैनी की अध्यक्षता में होली मिलन समारोह का आयोजन किया। समारोह में उपस्थितजनों ने एक दूसरे को गुलाल तिलक लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष राजकुमार सैनी, शिवजीराम, उपप्रधान औमप्रकाश सैनी, सुभाषचन्द, मास्टर रतीराम, सरपंच जगदीशचन्द, औमकार सैनी, रमेश सैनी, राजकुमार सैनी, हेमन्त सैनी, आजाद सैनी, मनीष सैनी, नवीन सैनी, सुनील सैनी, कृष्ण सैनी, हवासिंह, मुकेश, कृष्ण, बेगराज, श्रीराम, चिरंजीलाल, सुरजीत, बीरसिंह सैनी, रक्तवीर राजेश डूडेजा आदि उपस्थित रहे।

होली भाईचारे व सौहार्द का पर्वः अर्जुन

- होली रंगों का नहीं, बल्कि भाईचारे एवं आपसी सौहार्द का पर्व : अर्जुन

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। होली खेलते जगत कालोनी मित्र मंडल के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

होली रंगों का ही नहीं,बल्कि भाईचारे एवं आपसी सौहार्द का सबसे बड़ा पर्व माना जाता हैं, जिसे पूरा भारत वर्ष बड़ी धूमधाम से मनाता है। इस पर्व पर हम सभी को आपसी भेदभाव भुलाकर आपस में मिलजुलकर रहना चाहिए, ये बात जगत कालोनी मित्र मंडल द्वारा आयोजित होली धुलेंडी महोत्सव के शुभारंभ पर मंडल के संरक्षक समाजसेवी अर्जुन दास मिढ़ा ने कही।

मंडल के सभी सदस्यों द्वारा एक दूसरे को रंग गुलाल व गले लगाकर होली धुलेंडी का त्यौहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। डॉ. हरीश ने कहा कि होली का पर्व बड़े ही परम्परागत तरीके से मनाते हैं, जिसमें सर्व धर्म के लोग मिलकर रंगोत्सव का आनंद उठाते हैं। अनुज शर्मा ने कहा कि इस तरह के आयोजन हमे भारतीय संस्कृति से अवगत करवाते हैं और वे देश, समाज व परिवार की उन्नति में खुशियों के रंग घोलते हैं। इस अवसर पर एडवोकेट केके गुप्ता, कृष्ण कुमार, अजय मिढा, रजत वधवा, दिनेश मिढ़ा, विवेक चौधरी, राज वधवा, आशा मिढ़ा, सुनीता कुमारी, सुषमा, डॉ. ममता वधवा, काम्या, सीमा रानी, सोनल, आशु व पिंकी आदि उपस्थित रहे।

विस अध्यक्ष ने विधायक सुनील सांगवान को दी सांत्वना

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

चरखी दादरी। विधायक सुनील सांगवान से मुलाकात करते विस अध्यक्ष।

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण ने पूर्व मंत्री दिवंगत सतपाल सांगवान को एक कुशल राजनीतिक बताया और कहा कि कहा कि वे सतपाल सांगवान एक कुशल राजनीतिक थे। उनके निधन से राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में बड़ी क्षति हुई है जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती। आज उनके निधन से हरियाणा प्रदेश का बेहतर नेता नहीं होने का गम है।

विधानसभा अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण दादरी में विधायक सुनील सांगवान के निवास पर पहुंचे और परिजनों से मिलकर विधायक सुनील सांगवान के पिता पूर्व मंत्री सतपाल सांगवान के निधन पर शोक जताया। विधानसभा अध्यक्ष ने करीब आधा घंटे तक विधायक सुनील सांगवान व अन्य परिजनों से मुलाकात की और परिवार को दुख की घड़ी में ढाढस बंधाया। विधायक से मुलाकात के दौरान हरविंद्र कल्याण ने कहा कि सतपाल सांगवान लंबे समय तक राजनीति के माध्यम से जनसेवा में लगे रहे। उनका लंबा राजनीतिक अनुभव रहा है।

असामाजिक तत्वों पर हो कार्रवाई:विजय

- देवीलाल की प्रतिमा के अपमान पर कार्रवाई की मांग को लेकर थाने पहुंचे सामाजिक संगठन

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। कार्रवाई की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपने जाते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा निर्माता व स्वतंत्रता सेनानी पूर्व उपप्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल की प्रतिमा पर गांव धनाना में असामाजिक तत्वों द्वारा चढ़कर इंस्टाग्राम वीडिया बनाने के विरोध में शनिवार को सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि व जजपा पदाधिकारियों ने एसपी भिवानी व सदर थाना भिवानी को लिखित में मांग पत्र सौंपा, जिसमें आरोपी असामाजिक तत्वों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने की बात कही गई। जजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विजय गोडठा,लिगल सैल के प्रदेश प्रभारी एडवोकेट अवतार सांगवान, एडवोकेट पवन पूनिया, प्रदेश प्रवक्ता राजू मेहरा,बीसी सैल अध्यक्ष मदन यादव जुसवाला, युवा जजपा पदाधिकारी ओमी राजपूत सहित अनेक सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि ने कहा कि यह घटना अशोभनिय निंदनीय है। महापुरुष व स्वतंत्रता सेनानी सबके होते हैं। चौधरी देवीलाल ने हरियाणा की जनता के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं बनाई थी। वे उपप्रधानमंत्री के पद तक पहुंचे लेकिन आम आदमी के लिए हमेशा तत्पर रहे। किसान, कमेरे, मजदूरो के लिए अनेक योजनाएं बनाई। जजपा पदाधिकारियों ने कहा की आए दिन महापुरुषों की प्रतिमाएं खंडित की जाती है।

वर्षो पुरानी की परंपरा को हनुमान जोहड़ी मंदिर में निष्ठा से निभाया

श्रद्धालुओं ने बालाजी का पूजन कर उत्सव मनाया

- स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करते है फाग महोत्सव पर मेले : विधायक सर्राफ

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। फाग महोत्सव का शुभारंभ के दौरान विधायक घनश्यामदास सर्राफ, महंत चरणदास व अन्य। फोटो : हरिभूमि

हर वर्ष की भांति हनुमान ढ़ाणी स्थित हनुमान जोहड़ी मंदिर में एक माह तक चलने वाले फाग महोत्सव का शुभारंभ हुआ। महोत्सव की शुरूआत पूर्वमंत्री एवं विधायक घनश्याम सर्राफ ने बतौर मुख्यतिथि पहुंचकर की। फाग महोत्सव की शुरूआत फाग वाले दिन की शाम को होती है, जिसके बाद चार मंगलवार तक मेले का आयोजन होता है, जिसमें दूर-दराज से श्रद्धालुगण पहुंचते है। महोत्सव की शुरूआत के दौरान भारी तादात में श्रद्धालुण मंदिर में पहुंचे तथा बालाजी की पूजा-अर्चना कर सुख, शांति एवं समृद्धि की मन्नत मांगी,जिसमें श्रद्धालुओं ने जमकर खरीदारी भी हुई।

फाग महोत्सव की परंपरा 400 वर्ष पुरानी

मेले में महिलाओं और बच्चों में उत्साह देखते ही बन रहा था। महिला और बच्चे सबसे ज्यादा खरीदारी करते नजर आए। महंत चरणदास महाराज ने बताया कि होली पर्व के अगले दिन फाग पर हर वर्ष यहां पर फाग महोत्सव मनाया जाता है, जिसमें देशभर से श्रद्धालुगण यहां पहुंचते है तथा बालाजी के दर्शन करते हैं। उन्होंने बताया कि फाग महोत्सव मनाने की यह परंपरा करीबन 400 वर्ष पुरानी है, जिसे पूरी निष्ठा से निभाया जाता रहा है। उन्होंने बताया कि मंदिर के प्रति शहरवासियों में भारी आस्था है तथा लोग दूर-दराज से यहां माथा टेकने आते है। विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि महोत्सव के तहत आयोजित मेले का सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व अत्याधिक होता है। इन मेलों में स्थानीय कारीगर और व्यवसायी अपनी कला और उत्पादों का प्रदर्शन करते है, जिससे उनकी अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है। इस अवसर पर रैडक्रॉस सचिव श्याम सुंदर शर्मा, रमेश सैनी, विजय सिंहमार, राजेंद्र प्रसाद, नरेश आहुजा, विकास शर्मा, प्रेम मित्तल, देव पाराशर, प्रेम शर्मा, आनंद तंवर, संजय गुप्ता, सुरेंद्र पीएसओ, जयवीर कौशिक, बीरबल शर्मा, हरीश हालुवास आदि मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

प्रतियोगिता में मॉडल स्कूल का पंकज प्रथम

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी पंकज द्वारा जिला स्तरीय रीडिंग प्रमोशन मंथ प्रतियोगिता में स्टोरी राइटिंग में बाजी मारकर प्रथम स्थान हासिल किया। प्राचार्या संतोष भाकर ने बताया कि उनके विद्यालय में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। हर बार विद्यालय, कलस्टर, खंड, जिला स्तर की प्रतियोगिताओं उनके विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा भाग लेकर अव्वल स्थान प्राप्त किया जाता है। जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भी उनके विद्यालय के विद्यार्थी ने प्रथम स्थान हासिल करके बाजी मारी है। वहीं विद्यार्थी को सम्मानित किया गया।

सेक्टर में होली मिलन समारोह का आयोजन

भिवानी। अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य संदीप सिंह के सेक्टर-13 स्थित आवास पर शुक्रवार को होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। मौके पर चंदन का टीका लगाकर व गुलाल से क्षेत्र के विभिन्न सामाजिक संस्थाओं व क्षेत्र के गणमान्य लोगों व कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ होली खेली। मौके पर आई ढोल पार्टी ने सभी को झूमने के लिए मजबूर किया। संदीप सिंह ने कहा कि इस तरह के आयोजन से कार्यकर्ता उन्मुक्त मन से मिलते हैं। आपसी भाईचारे व प्रेम को बढ़ाता है।

मटका दौड़ सहित अन्य प्रतियोगिताएं करवाई

बवानीखेड़ा। गांव मिलकपुर में होली दलहंडी कार्यक्रम में महिलाओं की मटका दौड़ 60 वर्ष से ऊपर महिलाओं की दौड़, बुजुर्गों की दौड़, रस्साकशी, छोटे लड़के व लड़कियों की दौड़ आदि कार्यक्रम आयोजित किये गए। समाजसेवी नरेश यादव ने बताया कि इस कार्यक्रम को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराया गया।

सिल्वर जोन ओलंपियाड में छाए आकवुड स्कूल के विद्यार्थी, किया सम्मानित

70 से अधिक विद्यार्थियों ने लिया भाग, अधिकतर विद्यार्थियों ने जीता स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक

- सीखने के कौशल को बढ़ावा देती सिल्वर जोन ओलंपियाड जैसी प्रतियोगिताएं
- भावि ने विज्ञान, अंग्रेजी व गणित तीनों विषयों में प्राप्त किया स्वर्ण पदक : भारद्वाज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

पदक विजेताओं को सम्मानित करते हुए।

आज का दौर प्रतिस्पर्धा एवं कड़े मुकाबले का दौर है, जहां पर प्रत्येक विद्यार्थी को रोजाना कड़ी मेहनत करनी चाहिए, ताकि वह अपनी मेहनत एवं प्रतिभा के बल पर ना केवल अपना, बल्कि राष्ट्र का भविष्य भी स्वर्णिम बना सकें। क्योंकि देश का स्वर्णिम भविष्य युवाओं के मजबूत कंधों पर ही टिका होती है। यह बात ऑकवुड स्कूल के प्राचार्य सज्जन भारद्वाज ने शनिवार को विद्यालय परिसर में पदक विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए कही। उन्होंने बताया कि 4, 6 व 10 दिसंबर 2024 को सिल्वरजोन फाउंडेशन नई दिल्ली द्वारा आयोजित हुई सिल्वर जोन ओलंपियाड प्रतियोगिता का परिणाम हालही में जारी किया गया है। जिसमें ऑकवुड स्कूल के 70 से अधिक विद्यार्थियों ने गणित, विज्ञान एवं अंग्रेजी विषय में प्रतिभागिता की तथा अनेक विद्यार्थियों ने स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्राप्त कर विद्यालय तथा अपने माता-पिता का नाम रोशन किया। प्राचार्य सज्जन भारद्वाज ने बताया कि सिल्वर जोन ओलंपियाड प्रतियोगिता में भावि खरोलिया ने विज्ञान, अंग्रेजी व गणित तीनों विषयों में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त कक्षा एक से देवर्ष ने अंग्रेजी में गोल्ड मेडल, कक्षा चार से परी ने गोल्ड मेडल प्राप्त किया। विज्ञान विषय में कक्षा 8 आठ से युसूफ अली ने गोल्ड मेडल, अनुष्का ने ब्रोंज मेडल तथा रीतिका सांगवान में सिल्वर मेडल प्राप्त किया।

कौशल को बढ़ाती है प्रतियोगिताएं

प्राचार्य सज्जन भारद्वाज ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों की प्रतिभा का आंकलन कर उनके सीखने के कौशल को बढ़ावा देती है। इसीलिए प्रत्येक विद्यार्थी को बढ़-चढकर इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना चाहिए, ताकि उन्हे आगे बढने का अवसर मिल सकें। सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र व उनके पदक प्रदान कर प्रार्थना सभा में सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त पूरे वर्ष के दौरान जिन विद्यार्थियों ने विद्यालय की सहपाठ्य गतिविधियों में शानदार प्रदर्शन किया, उन्हें भी प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। बच्चों के बेहतरीन प्रदर्शन को देखते हुए विद्यालय निदेशक दिनेश सिंह व प्रबंधन समिति सदस्य विक्रम राणा व मानवेंद्र सिंह ने सभी बच्चों को बधाई दी।

पर्यावरण को संरक्षित रखने में पेड़ निभा रहे अहम भूमिकाः रमेश

भिवानी। पर्यावरण को संरक्षित रखने में पेड़ अहम भूमिका निभाते है। प्रदूषित हो रहे पर्यावरण को बचाने के लिए पौधरोपण करना बहुत जरूरी है। इसी कड़ी में होली पर्व पर गांव लालावास में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें पौधारोपण करके पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम में भाजपा पंचायती राज प्रकोष्ठ के प्रदेश मीडिया प्रभारी एवं बीडीसी रमेश लालावास ने कहा कि प्रदूषित हो रहे पर्यावरण को बचाने के लिए पौधरोपण बहुत जरूरी है। पौधरोपण के बाद उसकी देखभाल करने की जिम्मेदारी बनती है। निरंतर पेड़-पौधों की संख्या कम हो रही है जो चिंता का विषय है।

सभी अनाज मंडी और सब सेंटरों में लगी अधिकारियों की ड्यूटी

सरसों खरीद की तैयारियां मुक्कमल खरीद केंद्रों पर पहुंचने लगी फसल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। सरसों की सरकारी खरीद के पहले दिन अनाजमंडी में पहुंची सरसों की ढेरी व खरीद केंद्र पर पहुंची सरसों की ढेरी की सफाई करते मजदूर।

सरसों की सरकारी खरीद आज से शुरू हो गई। हालांकि अभी सरसों की खरीद केंद्र व मंडियों में ज्यादा आवक शुरू नहीं हुई। सरकारी खरीद के पहले दिन भिवानी अनाजमंडी में केवल नई सरसों दो ढेरी हर पहुंची। जिनको खरीद की प्रक्रिया शुरू कर दी गई। दूसरी तरफ जिला प्रशासन ने अनाजमंडी व खरीद केंद्रों पर सरसों की खरीद की सारी व्यवस्थाएं पूरी की जा चुकी है। खरीद केंद्रों तथा अनाजमंडियों में किसानों के लिए पीने के पानी, रात को ठहरने तथा खाने की अटल कैंटीनों की व्यवस्था की गई है। ताकि जो किसान अपनी सरसों की फसल को बेचने के लिए आता है तो उसको किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होने दी जाएगी। दूसरी तरफ मंडी सचिव अनिल कुमार ने बताया कि सरसों की सरकारी खरीद शुरू हो चुकी है। किसानों को किसी प्रकार की कोई समस्या या दिक्कत नहीं होने दी जाएगी। किसान अपनी सरसों की फसल को सुखाकर लाए। बताया जा रहा है कि केवल उन्हीं किसानों की सरसों सरकारी रेट पर खरीदी जाएगी। जिन किसानों ने अपनी सरसों की फसल को मेरी फसल मेरा ब्यौरा पर ऑन लाइन पंजीकरण किया हुआ है। पंजीकृत किसान खरीद केंद्रों पर पहुंचकर आधार कार्ड, पंजीकृत नम्बर या फिर जिस मोबाइल नम्बर से मेरी फसल मेरा ब्यौरा पर पंजीकरण किया हुआ है। वह मोबाइल नम्बर बताने पर भी मार्केट कमेटी कार्यालय में किसान को टोकन जारी किया जा सकता है।

सरकारी खरीद का आगाज

उपायुक्त महावीर कौशिक ने कहा कि सरकारी आदेशों के अनुसार आज शनिवार से जिला की सभी अनाज मण्डियो में और सब सेंटरों में सरसों की खरीद का कार्य शुरू कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि सरसों की खरीद सरकारी रेटो के अनुसार 5950 प्रति किवंटल की दर से खरीदी जाएगी। साथ ही उन्होंने सभी अनाज मण्डियो और सब सेंटरों में अधिकारियों को निर्देश दिए की किसानों को किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आनी चाहिए। किसानों के लिए टोकन, सरसों की झराई, उठाई, तुलाई आदि में किसी भी प्रकार की परेशानी ना आए। यदि कहीं से कोई शिकायत मिली तो उसके खिलाफ तुरंत कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

यहां-यहां होगी खरीद

जिला की भिवानी, बवानी खेड़ा, तोशाम, सिवानी, लोहारू, ढिगावा, जूई, बहल मण्डियो और कैरू, चागं व खरक कला सब सैटंरो पर मुख्यमंत्री नायब सिंह के नेतृत्व में सरकारी आदेशों की पालना करते हुए सरसों खरीद शुरू कर दी गई है। उक्त खरीद केंद्रो पर सरसों की खरीद की सभी तैयारियां पूरी की जा चुकी है। भिवानी अनाजमंडी में नई सरसों की ढेरियां पहुंचने लगी है। कुछ ही दिनों सरसों की आवक बढने लगेगी। क्योंकि अभी कुछ ही इलाकों में सरसों की कटाई हुई । कटी हुई फसलों के सूखने में समय लगेगा। जिस वजह से अगले एक दो दिनों में सरसों की मंडियों में आवक बढ़ने की संभावना है।

क्या कहते हैं अधिकारी

हैपेंड पुनीत पंघाल ने बताया कि जिला में हैफेड व (एचडब्लूसी) हरियाणा वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन के जरिए सरसों की खरीद की जाएगी। उन्होंने किसानों से आह्वान किया है कि वे मण्डी में अपनी सरसों को सुखाकर और साफ सुथरी करके लाए। किसानों को यदि किसी भी प्रकार की परेशानी होती है तो वह तुरंत संबंधित मार्केटिंग बोर्ड के सचिव से मिलकर अपनी समस्या को तुरंत समाधान करवाए।

तोशाम। आयोजित बैठक में संबोधित करता एक वक्ता।

महंगाई लोगों की जिंदगी को बना दिया नरक : रोहतास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम

शनिवार को विश्व के महानतम व्यक्ति कामरेड कार्ल मार्क्स के स्मृति दिवस पर ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन जिला कमेटी भिवानी की ओर से तोशाम के पंचायत घर में एक स्मृति सभा आयोजित की गई। स्मृति सभा की अध्यक्षता संगठन के जिला कमेटी सदस्य धर्मवीर मनसरवास ने की व संचालन जिला सचिव एडवोकेट बस्तीराम ने किया। इस दौरान सभा के मुख्य वक्ता जिला प्रधान रोहतास सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि यह कार्ल मार्क्स ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वैज्ञानिक ढंग से मानव समाज के इतिहास की व्याख्या करते हुए कहा की जिस प्रकार सामंतवाद के गर्भ से पूंजीवाद पैदा हुआ और उसने सामंतवाद को उखाड़ फेंक दिया।

इसी अनिवार्य नियम से पूंजीवाद के अंदर से जो सर्वहारा वर्ग पैदा हुआ है यह पूंजीवाद को उखाड़ कर समाजवाद कायम करेगा। उन्होंने कहा कि मार्क्स ने पहले बताया कि मानव समाज का इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास है। शोषण की सटीक व्याख्या करते हुए महान कार्ल मार्क्स ने कहा कि मजदूरों के शोषण से जो अतिरिक्त मूल्य पैदा होता है वही है मुनाफा इसी के चलते ही बड़े-बड़े पूंजीपति बन रहे हैं। दूसरी ओर महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महिला उत्पीड़न जैसी सब समस्याएं आम जनता की जिंदगी को नरक बना रही हैं। कामरेड ने कहा कि कार्ल मार्क्स सरीखे महापुरुषों से सीख लेते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कामरेड शिवदास घोष ने कहा था कि 1947 में अंग्रेज पूंजीपति चला गया और भारत का पूंजीपति गद्दी पर बैठ गया।

ये रहे मौजद

इस मौके पर महेंद्र सिंह कटारिया, रामकुमार कटारिया, नरसिंह स्योराण, इंदर सिंह फौजी, बहादुर सिंह अलखपुरा, कामरेड सुखबीर, रणधीर सिंह जाखड़, ओम सरल, सतवीर सिंह पंघाल आदि सदस्य मौजूद थे।

चोरी करने का आरोपी काबू, खेत में गया था परिवार

चरखी दादरी। घर में घुसकर चोरी करने के मामले में पुलिस ने आरोपी को काबू कर लिया है। जिससे चोरी के गहने भी बरामद किए हैं। पुलिस प्रवक्ता योगेश कुमार ने बताया कि दिनांक 12 मार्च को पुलिस को गांव समसपुर निवासी रोहित ने पुलिस को शिकायत में बताया था कि सुबह वह और उसका भाई मोहित खेत मे गए हुए थे। जबकि उनकी मां मंदिर में गई थी। दिन में करीब साढ़े 11 जब वे खेत से वापिस आए तो देखा कि घर का सामान बिखरा हुआ था। जब उन्होंने सामान को चैक किया तो एक सोने की अंगूठी, एक सोने का मंगलसूत्र, एक चांदी की अंगूठी, एक चांदी की पाजेब और 70 हजार रुपये गायब मिले। जब उन्होंने पड़ोस मे लगे सीसीटीवी कैमरे को फुटेज देखी तो रोहतक जिला के गांव सुंदरपुर निवासी राजकुमार घर में घुसता हुआ दिखाई दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर तत्काल कार्यवाही शुरु कर दी।

भिवानी। होली दहन करवाते पंडित किशन कौशिक।

होली पर्व बुराई पर अच्छाई का प्रतीक:कौशिक

भिवानी। हमारा देश त्योहारों का देश है। हर त्यौहार का हमारी संस्कृति में विशेष महत्व होता है। यह बात प्रधान किशन कौशिक ने स्थानीय हुडा पार्क के साथ सिटी मॉल के सामने होलिका दहन के दौरान उपस्थितजनों से बातचीत करते हुए कही। किशन कौशिक ने बताया कि होली पर्व बुराई पर अच्छाई का प्रतीक है। होली से अगले दिन फाग होता है जो रंगों का त्योहार है। यह त्योहार हमारे जीवन में रंग और उत्साह भरता है। उन्होंने बताया कि होली में महिला घर से गोबर के उपले बनाकर चढ़ाती है शाम के समय प्रहलाद भगत की पूजा कर होली का दहन किया जाता है । उन्होंने बताया कि सच्चाई अच्छाई और भक्ति को बढ़ावा देती है । इस अवसर पर अशोक शर्मा, एडवोकेट संदीप शर्मा, संदीप, श्री भगवान, मदन वर्मा, रविंद्र, राजेश सैनी, राम अवतार, तेल राम, किशन आदि मौजूद रहे।

नहरों में बढ़ती गंदगी से बढ़ रहा जल प्रदूषण

- जल स्रोतों को प्रदूषित करना दंडनीय अपराध : फौगाट

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम-1986 और जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम-1974 के तहत जल स्रोतों को प्रदूषित करना दंडनीय अपराध है, लेकिन इनका सख्ती से पालन नहीं किया जा रहा तथा लोगों द्वारा नहरों में खुलेआम कचरा फेंका जा रहा है। जिसके खिलाफ प्रशासन को सख्ता से कदम उठाने चाहिए। यह बात भारतीय जनता पार्टी के विधि प्रकोष्ठ के जिला संयोजक अधिवक्ता कुलवंत फौगाट ने जारी ब्यान में कही। उन्होंने कहा कि नागरिकों द्वारा फैलाए गए जल प्रदूषण का सबसे बड़ा उदाहरण दादरी की बधवाना डिस्ट्रीब्यूटरी है, जहां पर लोगों द्वारा फेंके गए कचरे का अंबार लगा रहता है। जबकि उन्हे भी पता है कि इस नहर से जब पानी उनके घर तक पहुंचेगा तो उन्हे ही बीमार करेगा। अधिवक्ता फौगाट ने कहा कि शहर की प्रमुख नहरों में बढ़ती गंदगी से जल प्रदूषण बढ़ रहा है। प्लास्टिक कचरा, घरेलू अपशिष्ट और औद्योगिक गंदगी के कारण नहरों का पानी बदबूदार और जहरीला होता जा रहा है। इसके बावजूद भी जिम्मेदार लोग लापरवाह बने हुए हैं। यही नहीं नहरों में बहने वाले कचरे से मच्छरों की संख्या बढ़ रही है, जिससे डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा मंडरा रहा है। उन्होंने कहा कि नहरों से प्रत्येक घर तक पहुंचाने वाली पानी की प्रति लीटर कीमत 50 से 60 रूपये सरकार को वहन करना पड़ता है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8295157800, 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज़ पर मान्य। अन्य किसी साईज़ के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

कार्यक्रम | लोगों ने एक-दूसरे को तिलक लगाकर होली मनाई

जल एवं पर्यावरण संरक्षण के संकल्प के साथ मनाया होली महोत्सव

जल एवं पर्यावरण प्रदूषण से निपटने के लिए आज से उठाने होंगे सकारात्मक कदम : यादव

संदीप यादव पार्षद द्वारा कॉलोनी में किए जा रहे प्रगति कार्यों की प्रशंसा की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। होली मिलन कार्यक्रम में एक दूसरे को गुलाल अबीर लगाते हुए।

पुराना हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी स्थित कल्पना चावला पार्क में होली महोत्सव बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। पार्षद संदीप यादव की अध्यक्षता में आयोजित हुए कार्यक्रम में सभी लोगों ने एक-दूसरे को तिलक लगाकर होली मनाई तथा जल एवं संरक्षण की दिशा में कार्य करने व युवाओं को इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया। इस दौरान कॉलोनी की विभिन्न समस्याओं पर चिंतन भी किया गया। कॉलोनी रेजीडेंट वेलफेयर एसोसिएशन को पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए 11 सदस्यों की समिति का गठन किया। इसके साथ ही यह भी फैसला लिया गया कि यदि कोई अतिरिक्त निवासी समिति में शामिल होना चाहता है तो अपना नाम केके वर्मा या संदीप यादव के पास भेज सकता है। इसके उपरांत मकान नंबर-34 के सामने वाले पार्क का नाम मातृशक्ति पार्क रखने का प्रस्ताव रखा गया। संदीप यादव पार्षद द्वारा कॉलोनी में किए जा रहे प्रगति कार्यों की प्रशंसा की गई। केके वर्मा द्वारा रचित होली गीत मिलजुल के होली मनाओ, इस रंगों के त्यौहार में सब नाच नाच के गाओ के साथ होली मिलन का समापन हुआ। इस मौके पर पार्षद संदीप यादव व भिवानी पर्यावरण शुद्धिकरण समिति के संयोजक केके वर्मा ने कहा कि इस प्रकार के मिलन समारोह सामाजिक एकता व भाईचारे को मजबूती प्रदान करते है। इस अवसर पर दिनेश वधवा, मनीष बंसल, नरेंद्र शर्मा, आशीष, हितेश गुप्ता, रवि गुप्ता, मदन वर्मा, एचसी वशिष्ठ, प्रवीण आदि मौजूद रहे।

खापों ने मिलकर शांतिपूर्वक तरीके से मनाया होली का पर्व

बवानीखेड़ा। गांव पुर में स्वर्गीय चौधरी बलवंत सिंह कृषि फार्म के अंदर ऐतिहासिक होली और दुलडी मनाई गई। सर्वजातीय जाटू खाप 84 के प्रधान ने सभी को बधाई दी महम चौबीसी के प्रधान सुभाष गोयत ने प्रधान कैप्टन भीम सिंह मिताथल चंदन का तिलक लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। मौके पर उपस्थित पूर्व प्राचार्य राजेंद्र सिंह, कार्यक्रम आयोजक डॉ राजेश सिंह सनसनीवाल, सतपाल सरपंच घूसकानी, रणबीर सरपंच धनाना, कर्मवीर सरपंच कुंगड, प्रधान प्रेम कुमार राष्ट्रीय अध्यक्ष घनघस खाप, समाजसेवी जय भगवान शर्मा मंडाना, हवासिंह सिंह मंडाना आदि मौजूद रहे।

जय हिन्द आयुर्वेद एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथी
भिवानी का पहला हेल्थ केयर जहां नाड़ी डिजिटल मशीन से देख कर रिपोर्ट कार्ड साथ दिया जाता है ताकि उचित इलाज किया जा सके।
- जैसे गाड़ी की सर्विस करवाते हो वैसे ही अपनी बॉडी की सर्विस करवाए ताकि बीमारी पास ही न आए।
- सभी बीमारियों का इलाज दवा से और बिना दवा के।
- लीपोमा की गांठ बिना ऑपरेशन इलाज।
- पीत पथरी, किडनी की पथरी,पेट की सभी बीमारी का इलाज।
- शुगर का इलाज,बवासीर और भगंदर का इलाज।
- औरतों की सभी बीमारी का इलाज।
- एक ही जगह सभी थैरपी फिजियो थैरपी, नाचरोथर्पी (मिट्टी पानी से इलाज), एक्यूप्रेशर थैरपी,कप थैरपी, योगा थैरपी, और बिना किसी साइड इफेक्ट के इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सभी बीमारी का इलाज।
- सभी थेरेपी का डिप्लोमा और अनुभवी डॉक्टर द्वारा ट्रेनिंग दी जाती है।
- अपने बॉस खुद बने और बेरोजगारी से मुक्ति पाए महीने का 30/50 हजार कमाए खुद थेरेपिस्ट बने।
Dr. Krishan Singh
(Naturopath) (रिटायर्ड फौजी)
BEMS, DNYS (MD), D.Ay.A, D.ma.T, D.Ay, D.P.K., DPT
मकान न. 4, पटेल नगर,
सीआईडी ऑफिस के सामने, भिवानी
सम्पर्क सूत्र: 6005452863

आज के दौर में अकसर देखा जाता है कि अधिकतर युवा आपस में बातचीत के दौरान भाषा की मर्यादा का ध्यान नहीं रखते हैं। वे अपनी पर्सनालिटी को बिंदास दिखाने के लिए प्राय: ऐसा करते हैं। सच्चाई यह है कि इससे न केवल उनकी सोशल इमेज बिगड़ती है, वर्कप्लेस पर आगे बढ़ने की राह में भी ऐसी भाषा रुकावटें पैदा करती है। इसलिए संवाद के दौरान सजग रहना जरूरी है।

आपसी संवाद की भाषा हो
मर्यादित-सकारात्मक-मधुर

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

वर्चुअल दुनिया में परोसे गए कंटेंट की अमर्यादित भाषा को लेकर चल रही बहस के बीच हर किसी के लिए सभ्य शब्दों का महत्व समझना आवश्यक है। आभासी संसार से कहीं ज्यादा, असली दुनिया में सधी संतुलित अभिव्यक्ति जरूरी है। खासकर कूल बनने और कमाल का व्यक्तित्व हो जाने की भूल-भुलैया के इस दौर में युवाओं को यह बात समझनी ही होगी। जरूरी है कि अपने वर्कप्लेस पर भी शब्दों की सभ्यता का दामन थामे रहें। सधी छवि और सफल भविष्य के लिए वर्कप्लेस पर सभ्य भाषा बहुत मायने रखती है।

शब्दों से जुड़ा सम्मान

काम-काजी संसार में किसी भी तरह के लिखित या मौखिक बातचीत में असभ्य शब्दों का इस्तेमाल करने से बचें। किसी भी परिस्थिति में न तो असभ्य शब्द लिखें और न ही बोलें। ध्यान रहे कि आपके शब्दों से स्वयं का सम्मान भी जुड़ा है। यह न भूलें कि दूसरों के मन और मान को ठेस पहुंचाने वाले शब्द इस्तेमाल करने वाले खुद भी किसी से इज्जत नहीं पाते हैं। बावजूद इसके ऑफिस में भी ह्यूमर के नाम पर किसी सहकर्मी या सहायक स्टाफ की हंसी उड़ाने की गलती बहुत से लोग करते हैं। इस तरह के असामान्य और कुंठाग्रस्त व्यवहार के घेरे में आने से बचने के लिए पहले ही कदम पर सजगता जरूरी है। वरना जाने-अनजाने कुछ भी कह-सुना देने की आदत बनती जाती है। बिना सोचे-समझे मुंह से अभद्र शब्द निकलने लगते हैं। करियर को नुकसान पहुंचाने वाली यह आदत खुद आपको भी एक कुंठित व्यक्तित्व ही देती है। जोश भरे युवाओं को हर पल याद रखना चाहिए कि काम-काजी दुनिया में अनुशासित रहना बहुत आवश्यक है। अच्छी भाषा, इसी अनुशासन का हिस्सा है। अनुशासन के दायरे में रहते हुए सदा सकारात्मक ढंग से बातचीत करने की राह चुनने में ही समझदारी है। किसी के साथ भी असभ्य संवाद करने से पहले याद रखिए कि ये शब्द स्वयं आपके सम्मान से भी जुड़े हैं।

इमेज पर पड़े बुरा प्रभाव

बातचीत में इस्तेमाल होने वाले अभद्र शब्द, इंसान की बॉडी लैंग्वेज भी बिगाड़ देते हैं। बोलने वाले के हाव-भाव को भी नेगेटिव रंगत में ढाल देते हैं। शब्दों पर कंट्रोल न करना, इंसान की बॉडी लैंग्वेज को अजीबो-गरीब बना देता है। समझना मुश्किल नहीं कि ऐसी सभी बातें व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करती हैं। जो सीधे-सीधे वर्कप्लेस पर आपकी इमेज बिगाड़ने वाली साबित होती हैं। वहीं सोच-समझकर बोलना, न केवल आपका फर्स्ट इंप्रेशन पॉजिटिव बनाता है बल्कि आगे भी आपकी सकारात्मक छवि को कायम रखता है। सोशल लाइफ हो या प्रोफेशनल, सोशल एटिकेट्स हमेशा मायने रखते हैं। आपको यह समझना चाहिए कि बातचीत में गलत शब्दों का चुनाव, आपको असहयोगी और अकड़ू व्यक्ति का तमगा दिलाने वाला बर्ताव साबित हो सकता है।

बेहतरी के लिए सही भाषा जरूरी

काम-काजी दुनिया में आपसे जुड़े सीनियर हों या जूनियर, सही सोच और अच्छे मैनर्स से सबका दिल जीता जा सकता है। स्पष्ट है कि इससे करियर में आगे बढ़ने में भी मदद मिलती है। बेहतर प्रोजेक्ट्स आपके हिस्से आते हैं। इतना ही नहीं सभ्य भाषा और सधा बर्ताव कई बार आपको किसी तकलीफ में फंसने से भी बचा लेता है। सहकर्मियों के साथ किया गया मीनिंगफुल और माइंडफुल संवाद काम-काज के लिए पॉजिटिव परिवेश बनाता है, जिसके चलते लोगों का दिल जीतने के साथ-साथ कामयाबी भी आपके हिस्से आती है। मन जीतने के इन सभी मोर्चों पर अच्छी भाषा सबसे ज्यादा मायने रखती है। असल में देखा जाए तो सकारात्मक शब्दों और सभ्य बोलचाल के प्रभाव का यह सिलसिला इंटरव्यू से ही शुरू हो जाता है। बावजूद इसके युवाओं की अजीबो-गरीब भाषा शैली आज चिंता का विषय बन गई है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों में भी सामने आया है कि आमतौर पर युवा बेझिझक अपशब्दों का इस्तेमाल करते हैं। इस बर्ताव के पीछे मौजूद साइकोलॉजिकल कारण बताते हैं कि आज की युवा पीढ़ी बोलने या करने से पहले कुछ नहीं सोचती। साथ ही वे इस बात से भी प्रभावित नहीं होते कि कोई उनके बारे में क्या सोचेगा? या उनके बोले शब्दों का किसी पर क्या प्रभाव पड़ेगा? सच्चाई यह है कि जीवन का कोई पक्ष, अशिष्ट शब्दों के नकारात्मक असर से नहीं बच पाता है। जरूरी है कि युवा आज के दौर में बढ़ती शाब्दिक अभद्रता की संस्कृति से बचें। दफ्तर में भावों, विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हुए संयत और सभ्य शब्दों का चुनाव करें। सधे व्यक्तित्व की सौगात देने वाला यह व्यवहार आपके लिए सदा ही बेहतरी के मार्ग खोलने वाला साबित होगा। *

संवाद से जुड़ा कारगर फॉर्मूला

प्रसिद्ध शोधकर्ता अल्बर्ट मेहराबियन द्वारा दिए गए 55-38-7 का फॉर्मूला बताता है कि कम्युनिकेशन 55 फीसदी नॉन वर्बल (शारीरिक भाषा यानी हाव-भाव) और 38 प्रतिशत वोकल (स्वर के द्वारा) होता है। संवाद में सिर्फ 7 फीसदी हिस्सा ही वर्बल यानी शब्दों से प्रकट होता है कि आप वास्तव में क्या कहते हैं? ऐसे में मजाक हो या प्रतिक्रिया देना, गलत शब्दों का इस्तेमाल आपकी अभिव्यक्ति की पूरी श्रृंखला ही बिगाड़ सकता है। इसलिए हर किसी को संवाद के दौरान अपने शब्दों के इस्तेमाल को लेकर पूरी तरह सजग रहना चाहिए।

इन दिनों आप अकसर बातचीत के दौरान अलग-अलग पीढ़ियों के लिए कुछ खास नाम सुनते होंगे, जैसे जेन एक्स, मिलेनियल, जेन जेड, बेबी ब्लूमर्स आदि। आपके मन में सवाल उठता होगा कि आखिर ये नाम कैसे रखे जाते हैं? इनकी क्या विशेषताएं हैं? आइए, इन सभी सवालों के जवाब जानते हैं।

एक-दूसरे से अलग-अनोखी है
हर जेनरेशन की कहानी

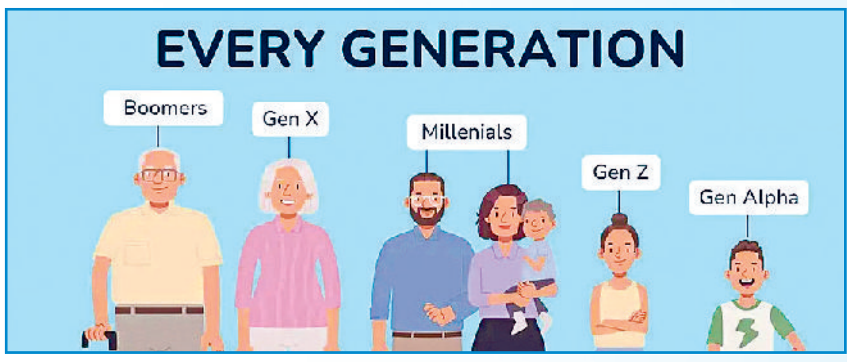

सोशल ट्रेंड
शिखर चंद जैन

एक समय तक आम चलन में नई और पुरानी पीढ़ी का ही जिक्र किया जाता रहा है। लेकिन अब अलग-अलग पीढ़ी को अलग नामों से भी जाना जाता है। इनका चलन हाल के सालों में तेजी से बढ़ा है।

कैसे तय होता है पीढ़ियों का नाम: पीढ़ियों का नाम तय करना, श्रमसाध्य, विचारपरक और कई चीजों पर आधारित एक जटिल प्रक्रिया है। यह एकेडमिक अनुसंधान, मीडिया के प्रभाव और सांस्कृतिक प्रभाव पर निर्भर करता है। जनसांख्यिक और समाजशास्त्री जनसंख्या सर्वेक्षणों, जन्म दरों और सामाजिक परिवर्तनों की पहचान के आधार पर ये नामकरण करते हैं। हां, इसे लोकप्रिय और प्रचलित करने का काम मीडिया का होता है।

नया ट्रेंड है पीढ़ियों का नामकरण: पीढ़ियों के नामकरण और श्रेणीबद्ध करने की परंपरा बहुत पुरानी नहीं है। 20वीं सदी की शुरुआत में इसका चलन शुरू हुआ है। इस वक्त जनसांख्यिकों और समाजशास्त्रियों ने जनसंख्या का विश्लेषण और सामाजिक बदलाव को दर्ज करना शुरू कर दिया था। पीढ़ियों के नाम महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक घटनाओं, विभिन्न आयु वर्ग की आदतों और समय विशेष पर आधारित होने लगे। अब आपको बताते हैं, अब तक की अलग-अलग पीढ़ियों के नामकरण के बारे में।

बेबी बूमर्स: वर्ष 1946 से 1964 के बीच जन्मे बच्चों को बेबी बूमर्स कहा गया। दरअसल, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक बेबी बूम आया था, जब दुनिया में जन्म दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। इस पीढ़ी ने 60 के दशक के बड़े सामाजिक परिवर्तन देखे। इसी दौरान कार्पोरेट जगत का उदय हुआ और और लोगों की जीवनशैली पर इस संस्कृति का खासा प्रभाव पड़ा। उस दौर के लोग आज सीनियर सिटिजन हो चुके हैं।

जेनरेशन एक्स: 1965 से 1980 के बीच जन्मे बच्चे, जेनरेशन एक्स कहलाते हैं। इस दरमियान समाज में कोई उल्लेखनीय और व्यापक परिवर्तन नहीं हुए। यद्यपि उस पीढ़ी के बच्चों ने पर्सनल कंप्यूटर का उद्भव होते देखा है। उस दौर के लोग अब मिड एज क्रॉस कर ओल्ड एज की ओर बढ़ रहे हैं।

मिलेनियल/जेन वाई: 1981 से 1996 के बीच जन्मे बच्चों को मिलेनियल कहा जाता है। उस पीढ़ी के लोगों ने 'मी जेनरेशन' या 'ईको बूमर्स' भी कहा जाता है। उस पीढ़ी को अपने में ही डूबे रहने, एकलवाद, डिजिटल टेक्नोलॉजी की जानकार और आर्थिक रूप से संपन्न माना गया। ये पीढ़ी मैटीरियल पजेजन से ज्यादा एक्सपीरियंस को महत्व देती थी।

जेनरेशन जेड: 1990 के मध्य से 2010 तक के दशक की शुरुआत तक जन्मी पीढ़ी को जेन जेड कहा जाता है। इस पीढ़ी को इसकी ग्लोबल कनेक्टिविटी और एंटरप्रेन्योरल स्पिरिट के लिए जाना जाता है। इन्हें कहीं-कहीं आई जेनरेशन और डिजिटल नेटिव्स भी कहा जाता है। इस पीढ़ी के बच्चे स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और सूचनाओं के त्वरित ग्रहण और उसे दूसरों तक प्रसारित करने के लिए जाने जाते हैं। ये पीढ़ी अभी युवावस्था से गुजर रही है।

जेनरेशन अल्फा: 2010 से 2024 के बीच जन्मे बच्चे जेनरेशन अल्फा के बच्चे कहलाते हैं। अल्फा 21वीं सदी की पहली पीढ़ी कही जा सकती है। यह पीढ़ी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑगमेंटेड रियलिटी और स्मार्ट टेक्नोलॉजी के साए में जन्मी, पली और बड़ी हुई है। उनकी शिक्षा, खेलकूद, एंटरटेनमेंट सब कुछ टेक्नोलॉजी से अत्यधिक प्रभावित है। यह पीढ़ी अभी टीनएज से गुजर रही है। इसके बाद इसी साल एक जनवरी 2025 के बाद से जन्म लेने वाली पीढ़ी को जेन बीटा का मेंबर माना जा रहा है। इनके जीवन के हर पक्ष में तकनीक का जबर्दस्त प्रभाव दिखेगा।

एक पीढ़ी के गुणों में समानता: यह एक जटिल प्रश्न है कि क्या दुनिया भर में जन्मे एक पीढ़ी के लोगों में समानता होती है? यह काफी कुछ दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में घटने वाली घटनाओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, वातावरण एवं सामाजिक ढांचे पर निर्भर करता है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इंटरनेट युग में जन्मी ग्लोबल युवा पीढ़ी के बहुत सारे गुण और आदतें लगभग एक समान होते हैं। *

क्या है सैंडविच पीढ़ी

सैंडविच पीढ़ी का अर्थ मध्यम आयु वर्ग यानी 45 से 55 वर्ष के इर्द-गिर्द के व्यक्तियों से है। इन पर अपने बुर्जुग माता-पिता और युवा बच्चों दोनों का भरण-पोषण करने की जिम्मेदारी है। सैंडविच पीढ़ी का नाम इसलिए रखा गया है, क्योंकि वे अपने बूढ़े माता-पिता की देखभाल करने के दायित्व और किशोरावस्था से युवा होते बच्चों की नई-नई फरमाइशों और चाहतों के बीच 'सैंडविच' जैसी स्थिति में होते हैं। ये कम ऊर्जावान, थके-थके से या बीमारियों से जूझने वाले हो सकते हैं। विभिन्न कार्य करने में असमर्थ हो सकते हैं या इनका वित्तीय रुप से अकसर हाथ तंग हो सकता है। इन्हें इस उलझन से गुजरना पड़ता है कि मां-बाप के लिए दवा और तीर्थाटन की व्यवस्था करें या बच्चों को महंगे गैजेट्स और ब्रांडेड कपड़े खरीदकर दें।

छोटी कहानी
सुनील कुमार महला

शर्मिंदा

ऑटो रिक्शा में अनिल के बगल में आकर वह व्यक्ति जैसे ही बैठा, उसने अपना एक हाथ अनिल के बैग पर रख दिया। अनिल ने उसे ऐसा करने से मना किया। लेकिन उस आदमी ने हाथ रखने की जो वजह बताई, अनिल खुद पर शर्मिंदा हो गया।

रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ा अनिल, बस स्टैंड जाने के लिए ऑटो रिक्शा का इंतजार कर रहा था। तभी एक ऑटो रिक्शा वाला तीस रुपए में बस स्टैंड जाने के लिए तैयार हो गया। अनिल ने अपने दो भारी-भरकम बैग ऑटो रिक्शा में रखे और स्वयं भी उसमें सवार हो गया। ऑटो रिक्शा में अनिल अकेला ही बैठा था। जब कोई अन्य सवारी ऑटो में बैठने नहीं आई तो उसने अपने एक बैग को ऑटो रिक्शा की सीट पर ही रख दिया, ताकि पैरों के पास सामान रखने से उसे ऑटो रिक्शा में बैठने में कोई दिक्कत-परेशानी न हो। शाम का समय था, ठंडी हवाएं चल रही थीं, इसलिए अनिल ने अपने चेहरे को मफलर से ढंक रखा था। ऑटो रिक्शा वाला अभी एक अन्य सवारी के इंतजार में था। थोड़ी देर में एक लंबा व्यक्ति, जो कंबल ओढ़े हुआ था, बस स्टैंड जाने के लिए उसी ऑटो रिक्शा के पास आया। ऑटो रिक्शा वाले ने उस व्यक्ति को भी ऑटो में बिठाया। वह लंबा व्यक्ति ऑटो रिक्शा में उस साइड में बैठ गया, जिधर सीट पर अनिल का सामान से भरा हुआ भारी-भरकम बैग रखा हुआ था। ऑटो रिक्शा में सवार होते ही कंबल ओढ़े हुए उस व्यक्ति ने अपना दायां हाथ बैग के ऊपर रख दिया और संभल कर बैठ गया। ऑटो रिक्शा वाला गंतव्य की ओर चल पड़ा। तभी अनिल ने ऑटो रिक्शा में बैठे उस व्यक्ति की ओर देखते हुए थोड़ा गुस्से में कहा, 'भाई साहब! जरा ध्यान से बैठें और हां, बैग को इतना दबाव देते हुए न पकड़ें। दरअसल, बैग में बच्चों के लिए कुछ टूटने वाला कीमती सामान रखा हुआ है और आपके हाथ के दबाव से इसमें रखा सामान टूट सकता है।'

कंबल ओढ़े हुए वह व्यक्ति अनिल की बात सुनकर एकदम से सकपका गया, उसने अनिल से कहा, 'अरे भाई साहब मुझसे गलती हो गई! मुझे नहीं पता था कि इसमें आपका कुछ टूटने वाला कीमती सामान रखा हुआ है। दरअसल, वो क्या है कि मेरा एक ही हाथ है न! ऑटो रिक्शा जब ऊबड़-खाबड़ सड़क पर तेजी से चलता है, तब एकदम से ऑटो रिक्शा में अपना बैलेंस बनाना मुश्किल होता है इसलिए, थोड़ा सहारा लेने के लिए, भूलवश मैंने आपके सामान से भरे बैग पर अपना हाथ रख दिया। इसके लिए मुझे माफ कर दीजिए, मैं बहुत शर्मिंदा हूं।' उस व्यक्ति की ये बातें सुनकर अनिल उसे एकटक देखता ही रह गया। दरअसल, अनिल ने कंबल ओढ़े व्यक्ति को ऑटो रिक्शा में बैठते समय एकबारगी देखा जरूर था, लेकिन उस व्यक्ति के कंबल ओढ़े रहने के कारण सुनील को इस बात का अहसास ही नहीं हुआ था कि जो व्यक्ति ऑटो में उसके साथ बैठा था, उसके एक ही हाथ है। अनिल अब अपने रूखे बर्ताव पर मन ही मन शर्मिंदा महसूस कर रहा था। *

गजल
अब्दुल कलाम

हम अमर होते

सुबह शाम उनकी नजर होते
आइना काश हम अगर होते

तुरबतें अपनी भी बाकमाल होती
हम जो मीर, गालिब या जफर होते

खत में पता ही गलत था वरना
गए हम भी उनके शहर होते

बैठ जाते घनी छांव में थक कर
हमारे जीवन का जो तुम शजर होते

तुम्हारी याद में जीते और याद में
मर कर भी हम अमर होते

तुमने देखा ही नहीं उस रोज का अखबार
वरना हमारे हाल से तुम बाखबर होते

लघुकथा
गोविंद भारद्वाज

बदलते हुए मायने

अपने बेटे के लिए सोनाक्षी को देखने आईं सावित्री ने कहा, 'आपकी बेटी सोनाक्षी हमें बहुत पसंद है, बस अब आपकी हां की जरूरत है।'

'हमारी तो हां है बहन जी... इसलिए तो आपको लड़की दिखाने के लिए बुलाया है।' पार्वती ने खुश होकर जवाब दिया।

'तो देर किस बात की है... मुंह मीठा कराइए...' सावित्री ने तपाक से कहा।

इस पर पार्वती ने विनम्रता से कहा, 'बहनजी रिश्ता पक्का करने से पहले दान-दहेज की भी खुल के बात कर लें तो ठीक रहेगा... ताकि आगे चलकर संबंधों में कोई खटास न आए।'

'बात तो आप ठीक कह रही हैं। इस बारे में मेरी राय यह है कि दहेज से तो हमें सख्त नफरत है... हां रही दान की बात, आप जितना भी देंगे अपनी इकलौती बिटिया को देंगे... इससे हमें कोई ऐतराज नहीं होगा।' सावित्री ने अपने मन की बात कही।

इस पर सोनाक्षी के पिताजी ने अपनी धर्मपत्नी पार्वती को दूसरे कमरे में बुलाया और उनसे धीरे से कहा, 'देखा पार्वती... कितनी चालाक हैं ये... दहेज से नफरत है और दान से नहीं... बातों-बातों में शब्दों के हेर-फेर से दहेज लेने की बात भी कह दी।'

पार्वती बोली, 'तुम ठीक कह रहे हो सोनाक्षी के पापा... मायने में तो दान और दहेज कोई अलग-अलग शब्द नहीं हैं।'

'क्या बातचीत हो रही है हमारे समधी-समधन में...' सावित्री ने उन्हें फुसफुसाते देखकर बाहर वाले कमरे से पूछा।

'कुछ नहीं बस, हम दुनिया के बदलते हुए मायने पर विचार कर रहे थे।' पार्वती ने जवाब दिया। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

मोहब्बत की दास्तानें

सारी दुनिया में मोहब्बत पर अब तक असंख्य कहानियां लिखी जा चुकी हैं। लेकिन यह ऐसा एहसास है, जिसे हर कोई अपनी तरह से महसूसता है, उसे बयां करता है। यह एहसास, वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय द्वारा लिखी गई पंद्रह प्रेम कहानियों के संकलन 'मितऊ' की कहानियों से गुजरते हुए और पुख्ता होता है। इन कहानियों में अलग-अलग उम्र और परिवेश के पुरुष और स्त्री के बीच पनपे प्यार के जज्बातों को पूरी संजीदगी से व्यक्त किया गया है। संग्रह की 'विकल्प' कहानी को अगर छोड़ दिया जाए तो अधिकतर में प्यार अपने अंजाम तक नहीं पहुंच पाता है। या कहें, सभी में अलग-अलग भावभूमि और जीवन-परिस्थितियों के आगे विवश, प्रेमी युगल विरह की टीस के साथ एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। इन कहानियों की विशेषता यह भी है कि इनके नायक-नायिकाओं में कहीं भी देहासक्ति नजर नहीं आती है, प्रेम की पवित्र भावना की गरिमा बनाए रखना उनके लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता है। इसे कई कहानियों में देख सकते हैं। फिर वो चाहे 'मेज नंबर सात' का लाइब्रेरियन हो या 'चौथे पहर का विरह गीत' का पत्रकार, प्रेम की मर्यादा को कभी नहीं लांघते हैं। यही इन कहानियों की खूबसूरती भी है, जो इन्हें बेहद पठनीय बना देती है। *

पुस्तक: मितऊ (कहानी संग्रह), **लेखक:** गोविंद उपाध्याय, **मूल्य:** 250 रुपए, **प्रकाशक:** न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

संयुक्त अरब अमीरात का दुबई शहर, पूरी दुनिया में अपनी खूबसूरती और आधुनिक सुख-सुविधाओं के लिए जाना जाता है। इसे खूबसूरत बनाने के लिए शहर की व्यवस्थित प्लानिंग, प्रशासनतंत्र और स्थानीय लोगों का सामूहिक योगदान है। कुछ समय से दुबई में रह रहे लेखक ने वहां की खासियतों को स्वयं अनुभव किया है। उसी को बयां कर रहे हैं अपनी जुबानी।

आधुनिकता-विविधता को समेटे
शानदार-खूबसूरत शहर दुबई

बेमिसाल
जोगिंदर रोहिल्ला

दुनिया के कई देशों में रहने और काम करने का अनुभव मुझे मिलता रहा है। फिलहाल दुबई में हूं। इस शहर की कई विशेषताएं ऐसी हैं, जो इसे दुनिया भर से अलग बनाती है। यह शहर आधुनिकता, विविधता और स्वच्छता का अनोखा संगम कहा जा सकता है। इस शहर की सड़कों से गुजरते हुए, मुझे इसकी हरियाली, चमचमाती गगनचुंबी इमारतें और अनुशासित जीवनशैली बहुत प्रभावित करती है। 'हरियाली' शब्द पढ़कर आप चौंक तो नहीं गए! दुबई तो संयुक्त अरब अमीरात में है, जो रेगिस्तानी इलाके के रूप में जाना जाता है। तो यहां हरियाली कैसे? शुरू-शुरू में मुझे भी यही आश्चर्य हुआ था, लेकिन सच यह है कि यहां के बहुत से रिहायशी इलाके बहुत ही व्यवस्थित ढंग से हरे-भरे नजर आते हैं।

इमारतों-सड़कों का आकर्षण: दुबई अपनी गगनचुंबी इमारतों और अद्वितीय वास्तुकला के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। बुर्ज खलीफा, जो दुनिया की सबसे ऊंची इमारत है, दुबई की पहचान बन चुका है। लेकिन यही नहीं इस शहर की लगभग हर ऊंची इमारत में कोई न कोई ऐसी खासियत है, जो इसे अलग बनाती है। ये खूबसूरत-गगनचुंबी इमारतें न केवल आधुनिकता का प्रतीक हैं, बल्कि इनसे दुबई का भविष्य भी झांकता दिखाई देता है। दुबई शहर की मुख्य सड़क शेख जायद रोड, जिसके दोनों ओर शानदार इमारतें हैं, ऐसा स्थान है, जो शहर की गतिशीलता और ऊर्जा को भी दर्शाती है। रात के समय इमारतों की जगमगाती रोशनी और सड़कों पर दौड़ती गाड़ियां अत्याधुनिक शहर का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती हैं।

मन मोहती स्वच्छता: दुबई में कदम रखते ही सबसे पहली बात, जो ध्यान आकर्षित करती है, वह है यहां की बेहतरीन स्वच्छता। चारों तरफ इतनी सफाई रहती है कि आप हैरान हो जाएंगे। मैं दुबई मरीना एरिया में कुछ दिन रहा और नोट किया कि सूरज निकलने से काफी पहले ही म्युनिसिपैलिटी के सफाई कर्मचारी अपने काम में लग जाते हैं और निश्चित करते हैं कि सफाई में कोई भी कमी न रहे। दुबई का हर कोना मानो, यह संदेश देता है कि स्वच्छता ही असली सुंदरता है।

सभी करते हैं नियमों का पालन: यातायात संबंधी कोई परेशानी यहां नजर नहीं आती है। सभी यातायात नियमों का पालन करते हैं। इन नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए कड़े दंड का प्रावधान है। उदाहरण के लिए अगर आप सड़क पार करते समय निर्धारित स्थानों का उपयोग नहीं करते हैं तो आपको स्थानीय 400 दिरहम (एईडी) का जुर्माना भरना पड़ सकता है। यह न केवल लोगों को अनुशासित रहने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि शहर की स्वच्छता और सुरक्षा बनाए रखने में भी मदद करता है। बहुत सारे विकसित देशों की तरह ही दुबई में भी सड़क पर पैदल चलने वाले लोगों को प्राथमिकता दी जाती है।

सी-बीच के लाजवाब नजारे: दुबई के समुद्र तट भी इसकी खासियतों में से एक हैं। साफ-सुथरे और व्यवस्थित समुद्र तटों पर समय बिताना किसी जादुई अनुभव से कम नहीं होता है। मुझे विशेष रूप से दुबई की बीच लाइब्रेरी बहुत पसंद आई। समुद्र किनारे किताबें पढ़ने का अनुभव अनोखा और सुकून भरा होता है। यह न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि ज्ञानवर्धन का भी। इन तटों पर सुबह-सुबह की सैर और सूर्यास्त के समय का दृश्य मन को असीम शांति प्रदान करता है। दुबई स्थित मरीना बीच और जुमेराह बीच का साफ और व्यवस्थित वातावरण इसे और भी खास बनाता है। यहां आने वाले पर्यटकों के लिए विभिन्न प्रकार के वॉटर स्पोर्ट्स का आयोजन भी किया जाता है, जो पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है।

दिखती है अनेकता में एकता: दुबई शहर की एक विशेषता, यहां विविधताओं का अनोखा संगम भी है। यहां 100 से अधिक देशों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। अलग-अलग संस्कृति, भाषा और परंपराओं के बावजूद यहां के लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। इतनी विविधता के बावजूद, दुबई एकता की मिसाल कायम करने वाला शहर है। यहां की दुकानों और बाजारों में विभिन्न देशों के व्यंजन और उत्पाद आसानी से मिल जाते हैं, जो इस सांस्कृतिक समृद्धि को और भी उजागर करते हैं।

हर जगह दिखती है सुचारु व्यवस्था: दुबई की सार्वजनिक सेवाएं भी बेजोड़ हैं। यहां की मेट्रो सेवा, बस सेवा और टैक्सी सेवा इतनी व्यवस्थित है कि किसी को भी यात्रा करने में कोई दिक्कत नहीं होती है। यहां का सार्वजनिक परिवहन इतना सुविधाजनक है कि आप बिना किसी परेशानी के शहर के कोने-कोने तक पहुंच सकते हैं। स्वास्थ्य सेवाएं और सरकारी कार्यालयों की कार्यप्रणाली इतनी तेज और प्रभावी है कि समय का सम्मान हर जगह नजर आता है।

दुनिया के कई देशों में घूमने के बाद, दुबई ने मुझे यह सिखाया है कि जब विविधता, अनुशासन और स्वच्छता का संगम होता है, तो एक बेहतर शहर-समाज का निर्माण होता है। *

बेमिसाल है मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी

दुबई में कोई पुस्तकप्रेमी पर्यटक आए और मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी न जाए, यह तो हो ही नहीं सकता है। वैसे भी मैं दुनिया में जिस भी नए शहर जाता हूं, वहां की लाइब्रेरी जरूर देखता हूं। लेकिन मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी को देखकर यही कहने को दिल करता है कि ऐसी लाइब्रेरी कोई और नहीं है। इस लाइब्रेरी की बिल्डिंग ही बुक शेप्ड है। यहां टेक्नोलॉजी और किताबों को बहुत ही अच्छे तरीके से एक जगह पर संजोया गया है। इस लाइब्रेरी में विभिन्न विषयों पर बेशुमार पुस्तकें और उनके डिजिटल फॉर्मेट्स बुक लवर्स के लिए उपलब्ध हैं।

यादगार नए साल का स्वागत

इस साल दुबई में नए साल (वर्ष 2025) का स्वागत करना मेरे जीवन का एक यादगार अनुभव रहा। मरीना बीच पर आतिशबाजी का शानदार प्रदर्शन, संगीत और खुशियों की गूंज ने इस पल को अविस्मरणीय बना दिया। नए साल के मौके पर सड़कों पर उमड़ी भीड़ और हर चेहरे पर खुशी की चमक इस शहर की जिंदादिली का प्रतीक थी। उसे देखकर यही लगा कि यहां के उत्सवप्रेमी लोग खुशी के हर अवसर को उल्लास से भर देते हैं।

सेल्फ मोटिवेशन
अतुल मलिकराम

गरीबी केवल आर्थिक स्थिति नहीं होती है, यह एक मानसिकता का भी परिणाम होती है। जब तक हम अपनी सोच नहीं बदलते, तब तक अपनी स्थिति में बदलाव करना मुश्किल है। यह बदलाव कैसे संभव है, इसके लिए क्या जरूरी है, हमें जरूर जानना चाहिए।

पैसा नहीं सोच बनाती है
हमें अमीर या गरीब

गरीबी, हमारे देश-समाज में एक ऐसी समस्या है, जिसे खत्म करने के लिए सबसे ज्यादा प्रयास किए गए। इसके लिए हर प्रकार की योजनाएं, कार्यक्रम और अभियान चलाए गए, फिर भी इस समस्या से छुटकारा नहीं पाया जा सका। इसका एक कारण यह है कि इस समस्या को केवल एक आर्थिक स्थिति मानकर ही इसका हल खोजा जाता रहा है, जबकि यह समस्या केवल आर्थिक अभाव की स्थिति नहीं है, बल्कि इससे बढ़कर यह एक मानसिक स्थिति भी है।

सोच रखती है मायने: गरीब होना केवल पैसों की कमी का नाम नहीं होता है, बल्कि यह उस सोच का भी परिणाम है, जो किसी को गरीबी के जाल से बाहर निकलने से रोकती है। कई बार लोग गरीबी को केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं। उनके अनुसार, गरीबी मिटाने का समाधान केवल धन है। लेकिन, क्या सचमुच ऐसा है? यदि केवल आर्थिक मदद से गरीबी दूर हो सकती, तो अब तक दुनिया से गरीबी का नामो-निशान मिट चुका होता। लेकिन ऐसा नहीं हो सका है।

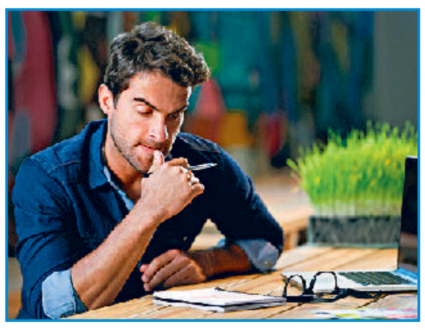

मानसिकता होती है जिम्मेदार: आर्थिक स्थिति के साथ-साथ गरीबी उस मानसिकता का परिणाम है, जिसमें इंसान अपने आप को परिस्थितियों का गुलाम मान लेता है। ऐसी सोच वाले लोग अपनी स्थिति को बदलने का प्रयास ही नहीं कर पाते। आपने कई बार देखा और सुना होगा कि कुछ परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी गरीब रहते हैं। इसका कारण केवल आर्थिक संसाधनों की कमी नहीं है, बल्कि वह मानसिकता है, जो उनकी हर पीढ़ी को विरासत में मिलती है। बच्चे अपने परिवार के वातावरण और सोच को आत्मसात कर लेते हैं। जब वे अपने माता-पिता को यह कहते सुनते हैं, 'हम तो हमेशा से गरीब हैं', या 'गरीबी के साए में पलना-बढ़ना ही हमारी किस्मत में है', तो उनके मन ही नहीं, बल्कि जीवन में भी यही विश्वास घर कर जाता है। और यही विश्वास फिर धीरे-धीरे उनकी सोच और व्यवहार का हिस्सा बन जाता है। इस प्रकार, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक यह मानसिकता हस्तांतरित होती रहती है और गरीबी नाम का यह साया और भी काला होता चला जाता है।

सही सोच से संभव है बदलाव: गरीबी की कैद से बाहर निकलने के लिए केवल धन की आवश्यकता नहीं होती है। इसकी असली चाबी है सकारात्मक सोच और दृढ़ संकल्प। वे ही लोग गरीबी से बाहर निकल सके हैं, जिन्होंने सबसे पहले अपनी सोच और मानसिकता बदली। उन्होंने यह समझा कि गरीब होना स्थायी स्थिति नहीं है। वे समझते हैं कि यदि वे मेहनत करें, अपने हुनर को पहचानें और अवसरों का लाभ उठाएं, तो वे अपनी स्थिति को बदल सकते हैं।

आत्मविश्वास से बदलेंगे हालात: सोच के समृद्ध होने का मतलब केवल बड़े सपने देखना भर नहीं होता है। इसका मतलब है, हर चुनौती को अवसर के रूप में देखना और लगातार प्रयास करते रहना। साथ ही यह ठान लेना कि इस स्थिति से बाहर निकलना ही है। जब तक यह विश्वास नहीं होगा कि आप अपनी स्थिति बदल सकते हैं, तब तक कोई भी आपकी मदद नहीं कर पाएगा। इसलिए अपनी स्थिति सुधारने के लिए सबसे पहले मानसिकता बदलने की जरूरत है।

खुद पर विश्वास करना गरीबी से बाहर निकलने की पहली सीढ़ी है। जब आप यह मानेंगे कि आप बदलाव ला सकते हैं, तभी आप प्रयास करेंगे। ज्ञान और कौशल वह हथियार हैं, जिनसे आप किसी भी स्थिति से बाहर निकल सकते हैं। नए कौशल सीखें और अपने आप को बेहतर बनाने की दिशा में काम करें। अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं। नकारात्मक विचारों को त्यागें और हर समस्या में समाधान ढूंढ़ने की आदत डालें। अगर हम अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं, अपने आप पर विश्वास रखें और अवसरों का लाभ उठाएं, तो हम गरीबी से बाहर निकल सकते हैं। *

फैशन ट्रेंड
विवेक कुमार

अगर आप ऐसी ड्रेस चाहते हैं, जो कंफर्टेबल होने के साथ-साथ आपको फैशनेबल और ट्रेंडी लुक भी दे, तो स्पोर्ट्स वियर या एथलीजर आपके लिए परफेक्ट च्वॉइस हो सकती है।

कूल फैशन का ऑप्शन
एथलीजर-स्पोर्ट्स वियर

इन दिनों युवाओं में स्पोर्ट्स वियर और एथलीजर का क्रेज सिर चढ़कर बोल रहा है। स्पोर्ट्स वियर और एथलीजर वियर ऐसी ड्रेस होती हैं, जिन्हें खासतौर से स्पोर्ट्स या जिम एक्टिविटीज के लिए डिजाइन किया जाता है। मसलन जॉगर्स, ट्रैक पैंट्स, लेगिंग्स, क्रॉप टॉप्स, हूडीज, स्नीकर्स और जैकेट्स आदि। ये ड्रेसेस डेली यूज के लिहाज से भी कंफर्टेबल और स्टाइलिश होते हैं। यह फैशन आमतौर पर युवा ही कैरी करते हैं, क्योंकि इसे कैरी करने के लिए बॉडी फिटनेस और फ्लैक्सिबिलिटी बहुत जरूरी है, तभी ये बेस्ट अपीयरेंस देती है।

क्यों बढ़ रहा है क्रेज: हाल के सालों में युवाओं में फिटनेस को लेकर क्रेज बढ़ा है, ज्यादा से ज्यादा यंगस्टर्स वर्कआउट करते हैं। आज के फिटनेस फ्रीक यंगस्टर्स ऐसी ड्रेस चाहते हैं, जो कंफर्टेबल और फैशनेबल होने के साथ-साथ उनकी फिटनेस को शो-ऑफ भी करे। ये सारी क्वालिटीज उन्हें स्पोर्ट्स और एथलीजर वियर में एक साथ मिल जाती हैं। ये ड्रेस ग्लोबल और ट्रेंडी फैशन का हिस्सा हैं। चाहे बॉलीवुड या हॉलीवुड के सितारे हों, मशहूर खिलाड़ी हों, बिजनेस टाईकून हों या किसी भी क्षेत्र के कामयाब युवा हों, वे फिट और स्मार्ट दिखने के लिए आजकल स्पोर्ट्स वियर को फैशन की तरह कैरी कर रहे हैं, इसलिए भी ये ड्रेसेस युवाओं को बहुत पसंद आ रही हैं। वे खूब चाव से इन्हें पहनते हैं।

होते हैं कंफर्टेबल-मल्टीपर्पस: एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर हल्के, कंफर्टेबल और स्ट्रेचेबल फैब्रिक से बनाए जाते हैं। ये बॉडी के लिए ब्रिथेबल (सांस लेने योग्य) होते हैं, जिस कारण इन्हें लंबे समय तक पहना जा सकता है। साथ ही ये मल्टीपर्पस और मल्टीस्टाइल होते हैं। जिम, कैजुअल आउटिंग या ऑफिस के लिए भी ये उपयुक्त समझे जाते हैं।

हर प्राइस रेंज में अवेलेबल: मार्केट में हर प्राइस रेंज में एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर अवेलेबल हैं। डिफरेंट ब्रांड्स और क्वालिटी के हिसाब से 500 से 1500 रुपए के लोअर रेंज, 1500 से 5000 रुपए के मिड रेंज और 5000 रुपए से शुरू होने वाले हाई-एंड रेंज में आपको ये स्पोर्ट्स वियर या एथलीजर मिल जाएंगे।

जब कैरी करें स्पोर्ट्स-एथलीजर: जब भी आप एथलीजर या स्पोर्ट्स वियर कैरी करें तो फिटिंग का ध्यान जरूर रखें। अधिक लूज स्पोर्ट्स वियर अटपटे लगते हैं। ये हमेशा फिट होने चाहिए। हालांकि इतने टाइट भी न हों कि आप असहज महसूस करें। दूसरी जो बात सबसे ज्यादा ध्यान देने की है कि आपके स्पोर्ट्स वियर का मैटीरियल क्या है? वास्तव में ये स्वेट विकिंग यानी पसीना सोखने वाला होना चाहिए और ब्रीथेबल यानी सांस लेने में योग्य तो होना ही चाहिए। स्पोर्ट्स वियर को हमेशा जितना संभव हो सादगी से पहनें। ये कैजुअल आउटिंग के लिए ही ठीक हैं। कभी फॉर्मल इवेंट में इन्हें कैरी करके न जाएं।

इन बातों का भी रखें ध्यान: न्यूट्रल और मोनोक्रोम लुक्स (जैसे-ब्लैक, व्हाइट, ग्रे) वाले एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर इन दिनों ट्रेंड में हैं। इन्हें कैरी करते समय अपने शूज का भी ध्यान रखना जरूरी है। इनके साथ आप हमेशा क्लीन और ट्रेंडी स्पोर्ट्स शूज या स्नीकर्स ही कैरी करें। स्पोर्ट्स वियर में लेयरिंग लुक भी खूब पसंद की जाती है। लेयरिंग लुक हुडीज, जैकेट्स आदि से मिलती है। लेयरिंग लुक स्पोर्ट्स वियर के साथ बेहतरीन और स्टाइलिश कॉम्बिनेशन बनाती है। जहां तक स्पोर्ट्स वियर के साथ एक्सेसरीज की बात है तो वाच, कैप या स्लिंग बैग जैसे हल्के एक्सेसरीज स्पोर्ट्स वियर को 'वॉव' लुक देते हैं। लेकिन ओवर ड्रेसिंग से बचना चाहिए। *

खास मुलाकात
पूजा सामंत

कुछ समय पहले नेटफ्लिक्स पर 'ब्लैक वारंट' वेब सीरीज रिलीज हुई है। इसमें जेलर सुनील कुमार गुप्ता के लीड रोल में जहान कपूर नजर आ रहे हैं। बीते दौर के मशहूर अभिनेता शशि कपूर के ग्रैंडसन जहान ने इस वेब सीरीज से जुड़े एक्सपीरियंस और एक्टिंग करियर से जुड़े सवालों के जवाब दिए इस बातचीत में।

मेरी पहचान वक्त के साथ आगे बढ़ेगी: जहान कपूर

जहान कपूर ने विक्रमादित्य मोटवानी के प्रोडक्शन में बनी वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' में जेलर सुनील कुमार गुप्ता का किरदार बहुत ही मैच्योर तरीके से निभाया है। हाल में पृथ्वी थिएटर में जहान कपूर से बातचीत हुई। पेश है इसके प्रमुख अंश-

हालिया रिलीज वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' में लीड एक्टर के तौर पर आपका सेलेक्शन कैसे हुआ?

'ब्लैक वारंट' की कास्टिंग मशहूर कास्टिंग डायरेक्टर मुकेश छाबरा ने की थी, उसमें मैंने भी ऑडिशन दिया। ऑडिशन के 2-3 महीने बाद मुझे विक्रमादित्य मोटवानी के ऑफिस से कॉल आया। मैं उस वक्त मकरंद देशपांडे के निर्देशन में 'सियाचिन' नाटक में मुख्य भूमिका निभा रहा था। विक्रमादित्य सर के साथ काफी बातचीत और 2-3 मीटिंग्स के बाद मुझे जेलर सुनील कुमार गुप्ता के रोल के लिए सेलेक्ट कर लिया गया।

जेलर सुनील कुमार गुप्ता का किरदार निभाने के लिए आपको किस तरह की तैयारी करनी पड़ी?

यह वेब सीरीज एक किताब 'ब्लैक वारंट : कंफेशन ऑफ ए तिहाड़ जेलर' पर आधारित है। इसे लिखा है खुद सुनील गुप्ता और सुनेत्रा चौधरी ने। मैंने सबसे पहले इस किताब को बारीकी से पढ़ा। मेरे रोल और लुक को लेकर काफी डिस्कशंस हुए। मूंछें पतली रखी जाएं या मोटी, बालों को कैसे रखा जाए, यूनिफॉर्म पहन कर कैसी चाल होगी, मेरा चलना शुरू में कैसे होगा, बाद में कैसे होगा? हर छोटी से छोटी बात पर ध्यान दिया गया। इस कहानी में मेरे किरदार के कई पहलू हैं। सुनील गुप्ता के मेंटल स्टेजेस को प्रेजेंट करना काफी मुश्किल था, किताब पढ़ने के बाद मुझे इसमें काफी हेल्प मिली। अब जब इस वेब सीरीज में मेरी एक्टिंग की खूब तारीफ हो रही है, तो बहुत अच्छा लग रहा है। इसका श्रेय मैं इस शो की पूरी टीम को दूंगा।

जेलर सुनील गुप्ता के किरदार से आप खुद को कितना रिलेट करते हैं?

यह सच है कि एक पारिवारिक संस्कारी युवक से सुनील कैसे गाली-गलौज करने वाले जेलर बन जाते हैं, कैसे कैदियों की फांसी देखते-देखते उनका दिल डेड जैसा हार्ड हो जाता है, इसे समझना बहुत मुश्किल था। जहां तक रियल लाइफ में सुनील कुमार गुप्ता के किरदार से रिलेट करने की बात है, तो मेरा फैमिली बैकग्राउंड उनसे पूरी तरह से अलग है। सिर्फ इतना कह सकता हूं कि सुनील की तरह ही मेरा स्वभाव भी सिंपल-सोबर है। मैं भी सुनील की तरह शांतिप्रिय और पॉजिटिव इंसान हूं।

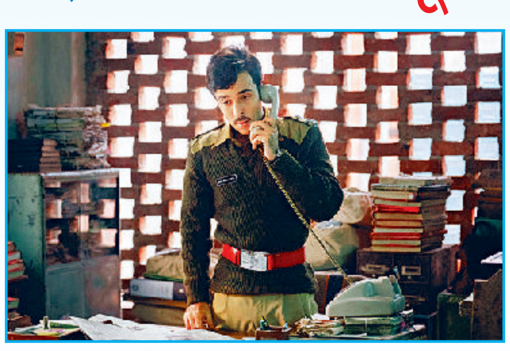

वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' के एक सीन में जहान कपूर

क्या आपने अभिनय में आने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि कपूर परिवार के ज्यादातर लोग अभिनय से जुड़े रहे हैं?

यह सच है कि हमारे परिवार का लगभग हर दूसरा सदस्य एक्टिंग से जुड़ा है, लेकिन इसी वजह से मैंने भी यही राह पकड़ी ऐसा नहीं है। मेरी मां 'शोले' फेम निर्देशक रमेश सिप्पी की पुत्री शीना सिप्पी एक जानी-मानी फोटोग्राफर और पिताजी कुणाल कपूर एक्टर के साथ पृथ्वी थिएटर के एडमिनिस्ट्रेटर हैं। मुझे जब स्कूल में दाखिल किया गया तो सभी को अहसास हुआ कि मैं डिस्लेक्सिक हूं। मुझे पढ़ने में दिक्कत हो रही थी। मेरे मम्मी-पापा ने तुरंत इसका ट्रीटमेंट शुरू करवाया, तब जाकर मैं इससे बाहर निकला। इस वजह से मेरे करियर को लेकर बहुत ज्यादा प्लानिंग नहीं हुई। दसवीं क्लास के एग्जाम्स के बाद मैं पृथ्वी थिएटर से जुड़ गया। वहां बैक-स्टेज, सेट-डिजाइनिंग से लेकर प्रोडक्शन इंचार्ज तक, मुझे जो भी काम मिलता था, मैं कर लेता था। ग्रेजुएशन करने के दौरान ही मेरी मां ने मुझे एक एड एजेंसी में काम करने भेजा। मैंने इस एड एजेंसी में कॉपी राइटिंग, को-ऑर्डिनेशन से लेकर मॉडल शूट तक हर डिपार्टमेंट में काम सीखा। इन सबके बीच 'पृथ्वी थिएटर' के नाटकों में मेरा अभिनय भी चल रहा था। इसी तरह मुझे एक्टिंग से लगाव हुआ, और निर्देशक हंसल मेहता ने मुझे अपनी फिल्म 'फराज' में मौका दिया। इस तरह फिल्मों में बतौर एक्टर मैंने करियर बनाना डिसाइड कर लिया।

क्या कपूर परिवार का होने की वजह से आप प्रेशर भी फील करते हैं?

अभिनय की दुनिया में कपूर परिवार को सौ वर्ष हो चुके हैं। मैं शशि कपूर का पोता हूं। लोग आज कहते है मुझ में दादाजी (शशि कपूर) की छवि नजर आती है, यह सुनकर मुझे अच्छा लगता है, लेकिन उन्होंने जो महारत, जो मुकाम हासिल किया, क्या मैं वो क्या हासिल कर सकता हूं? पता नहीं! जाहिर-सी बात है मुझसे भी दर्शकों को कई उम्मीदें होंगी। मेरी तुलना लोग रणबीर, करीना, करिश्मा से भी करते होंगे। लेकिन इस सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता कि इंसान को आगे बढ़ने के लिए टैलेंट के साथ किस्मत का साथ होना निहायत जरूरी होता है। और इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि हर किसी की किस्मत अलग ही होती है। हाथ की पांचों अंगुलियां एक समान होती हैं क्या? प्रतिभा है, पर मौके न मिलें तो प्रतिभा कैसे उजागर होगी? मैं कपूर खानदान से जुड़ा हुआ हूं, सिर्फ इसलिए घर पर बैठे-बैठे काम का इंतजार नहीं करता रहूंगा। मैं खुद कोशिशें करता रहूंगा। ऑडिशन देता रहूंगा। मुझे पूरा यकीन है कि मेरी पहचान वक्त के साथ आगे बढ़ेगी। *

घर में वे सिर्फ मेरे दादाजी थे...

अपने दादाजी (शशि कपूर) को जहान कैसे याद करते हैं, उनकी कौन सी फिल्में उन्हें पसंद हैं पूछने पर जहान बताते हैं, 'फिल्मी पर्दे पर तो वे शशि कपूर थे, द अल्टीमेट हैंडसम हीरो। लेकिन घर में मुझे प्यार करने वाले, वे सिर्फ मेरे दादाजी थे। मेरी अंगुली पकड़ कर मुझे आइसक्रीम खिलाने ले जाते थे। अकसर मुझे और मेरी सिस्टर शायरा को इंग्लिश फिल्म दिखाने ले जाते थे। बहुत सुनहरे दिन थे वो। जहां तक उनकी फेवरेट फिल्म की बात है तो दादाजी की हर फिल्म तो मैंने देखी नहीं, लेकिन 'दो और दो पांच', 'कलयुग', 'शर्मिली', 'दीवार', 'जूनून', 'आ गले लग जा' मेरी पसंदीदा फिल्में रही हैं।'